thearyasamaj.org

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-फाल्गुन-चैत्र संवत् 2071-72
मार्च 2015

ओ३म्

अंक 116, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में 88वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव की झलकियां

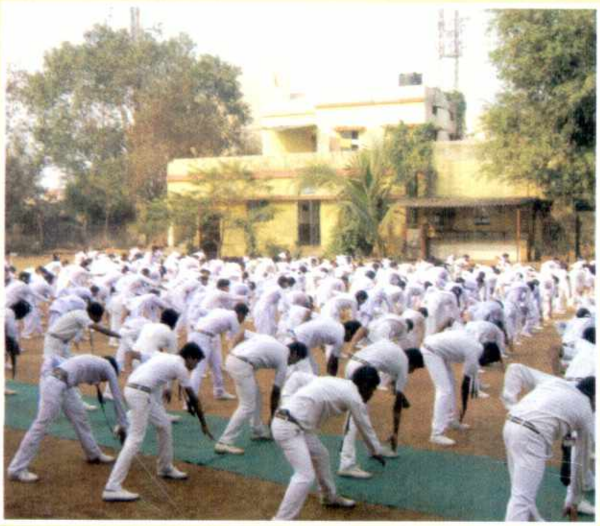

thearyasamaj.org

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७१-७२
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११५
दयानन्दाब्द - १९१

वर्ष - १०, अंक ९ ओ३म् मास/सन् - मार्च - २०१५

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,'
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
वरि.प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : सखा प्रभु की पुकार	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : वसन्तोत्सव बनाम - नवशस्येष्टि	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	अयोग्य विवाह : समाज व संस्कृति के लिए घातक	आचार्य आर्यनरेश	०७
४.	अन्धविश्वासों का खात्मा सिर्फ वैदिक सिद्धान्तों से	खुशहालचन्द्र आर्य	०८
५.	मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम	डॉ. सूर्यप्रकाश मिश्र	१०
६.	काम और पूजा	ओमप्रकाश बजाज	१२
७.	आर्यसमाज में संख्यात्मक नहीं गुणात्मक विकास की आवश्यकता	मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति	१३
८.	'होली' आषाढ़ी-रबी फसल व ऋतु परिवर्तन के स्वागत का पर्व	मनमोहन सिंह आर्य	१६
९.	तेजस्वी भजनोपदेशक - पं. वेगराज आर्य	डॉ. भवानीलाल भारतीय	१८
१०.	कविता - बलिदानी शौर्य को नमन	गजेन्द्र सिंह सोलंकी	१९
११.	कविता - नवसम्वत् हो मंगलकारी	स्व. राधेश्याम आर्य	१९
१२.	नारी सम्मान	प्रो. सुभाषचन्द	२०
१३.	मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऋणी हूँ	भारतेन्दु सूद	२३
१४.	आर्य पथिक पं. लेखराम	डॉ. अशोक आर्य	२५
१५.	होम्योपैथिक से 'स्वाइन-फ्लू' का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२६
१६.	समाचार दर्पण		२८

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

thearyasamaj.org

वेद वेदामृत

सखा प्रभु की पुकार

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

ब्रह्माणं ब्रह्मवाहस, गीर्भिः सखायमृग्मियम्।
गां न दोहसे हुवे॥ ऋग्. ६.४४.१०

ऋषिः **शंयुः बार्हस्पत्यः** । देवता **इन्द्रः** । छन्दः **गायत्री** ।

● **(ब्रह्माणं)** ज्ञानी **(ब्रह्मवाहसं)** ज्ञान के वाहक, **(सखायं)** सखा **(ऋग्मियं)** ऋचाओं वाले, अर्चनीय अथवा पूजनीय (इन्द्र प्रभु) को (मैं) **(हुवे)** पुकारता हूँ (न)जैसे **(दोहसे)** दुहने के लिए **(गां)** गाय को (पुकारते है)।

● **गो** दोहन-बेला में गोपाल दूध दुहने के लिए गाय को पुकारते हैं। काली, धौली, लाल, भूरी, सफेद अपनी गायों को नाम ले-लेकर आवाज लगाते हैं और वे गो-पालक के पास दौड़ी चली आती है। ऊधसों में दूध से भरी हुई दूध पिलाने और दुहाने के लिए झुककर खड़ी हो जाती है। जैसे उनके अमृतोपम दूध से गो-स्वामी तृप्ति पाता है, ऐसे ही मैं जगन्माता के दूध से संतृप्त होना चाहता हूँ।

मैं प्राणियों से अपने इन्द्र प्रभु को पुकारता हूँ। वह 'ब्रह्म' है, स्वयं ज्ञानी है तथा 'ब्रह्मवाहस्' अर्थात् हमारे प्रति ज्ञान-धारा का वाहक भी है। जैसे गौ माता के स्तनों में दूध भरा होता है और वह उस दूध को अन्यों को प्रदान करती है, वैसे ही मेरे प्रभु के अन्दर ज्ञान-दुग्ध की धाराएं भरी हुई है और वह ज्ञान-पिपासुओं के लिए उन्हें प्रस्तुत करता रहता है। 'ब्रह्मा' यज्ञ का संचालक भी होता है। होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा-यज्ञ के इन चारों ऋत्विजों में ब्रह्मा सबसे प्रमुख रहता है, जो अन्य ऋत्विजों की गतिविधि पर निरीक्षण रखते हुए यज्ञ की सफलतापूर्वक समाप्ति का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेता है। हमारा आत्मा भी यजमान बनकर अध्यात्म-यज्ञ का आयोजन कर रहा है, जिसमें मन 'होता', बुद्धि 'अध्वर्यु', प्राण 'उद्गाता' तथा परमेश्वर 'ब्रह्मा' बनता है। परमेश्वर 'ब्रह्मा' का पद लेकर हमारे इस अध्यात्म-साधना-यज्ञ को निर्विघ्नं पूर्ण करने वाला है और 'ब्रह्मवाहस्' होकर हमें ब्रह्मज्ञान प्राप्त कराने वाला है। मेरा प्रभु 'सखा' है, संकट के समय काम आने वाला सच्चा साथी है। सांसारिक सखा तो समय पर धोखा भी दे जाते हैं, पर मेरा प्रभु कभी धोखा नहीं देता। वह पूरा सखित्व निर्वाह करता है - विपदा से उबारता है, घावों को भरता है, कष्ट से कराहते हुए को सान्त्वना देता है, सम्पदा प्राप्त कराता है और उस सम्पदा की रक्षा भी करता है। मेरा प्रभु 'ऋग्मिय' भी है। वह ऋचाओं का गायक है, अमर वेद-काव्य का कवि है, अर्चनीय है, पूजनीय है। आओ, ऐसे अपने परम देव का हम तन्मय होकर स्तुति-वाणियों से आवाहन करें। जैसे गाय का आह्वान कर उससे हम रस पाते हैं, वैसे ही प्रभु से भी दिव्य आनन्द का रस प्राप्त करें और उसके पान से तृप्ति-लाभ कर स्वयं को कृतार्थ करें। प्रभु कामधेनु बनकर हमें नित्य अपना पयःपान कराता रहे।

संस्कृतार्थ :- १. ऋग्मियम् ऋग्मन्तमिति वा, अर्चनीयमिति वा, पूजनीयमिति वा (निरु. ७.२६). २. दोहसे दोग्धुम्। दुह प्रयूरमे, तुमुन् अर्थ में असे प्रत्यय।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

कभी नीर न गिरे नयन से, अधरों में उल्लास हो।
तन-मन पुलकित हों सभी के, जीवन में मधुमास हो ॥

वसन्तोत्सव बनाम नवशस्येष्टि

अग्निदूत के सहृदय पाठक वर्ग ! आप सभी को वासन्ती नवशस्येष्टि की अनन्त शुभकामनाएँ।

यह भारत वर्ष सदा से पर्वप्रिय देश रहा है यहां वर्षभर एक के बाद एक पर्व मनाये जाते हैं। जो भारतीय जनमानस में मिलजुल कर रहने की भावना को उद्दीप्त करते हैं। वस्तुत: ये पर्व उत्साह से अपने कर्त्तव्य में जुटे रहने की प्रेरणा के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर को प्रोन्नत बनाने में अहम् भूमिका निभाते है। पाणिनीय व्याकरण के आधार पर ***पृ पालनपूरणयो:*** धातु से पर्व शब्द निष्पन्न होता है जिसका अभिप्राय है **जनान् आनन्देन पूरयतीति पर्व** अर्थात् जनमानस में जो प्रसन्नता व हर्ष का संचार कर दे उसका नाम पर्व है। उड़ीसा में कहावत है,**बार मास रे तेर टी** पर्व अर्थात् विश्व में केवल अपना भारतवर्ष ही ऐसा देश है जहां पर बारह महिने में तेरह पर्व मनाये जाते है यह इस देश की एक अन्यतम खासियत है उपर्युक्त कहावत के आधार पर उड़ीसा में जिन तेरह पर्वों की गणना की जाती है यद्यपि देश में सर्वत्र उन्हीं नामों एवं रूपों में वे पर्व नही मनाये जाते पुनरपि किसी न किसी रूप में अपनी भावनाओं का इजहार तो पर्वो के जरिये करते ही है इस अंतिम सत्य को कौन नकार सकता है ?

देश में मनाये जाने वाले अनगिनत पर्वों में से चार पर्व ऐसे है जो पृथक्-पृथक् अपना अपना विशिष्ट महत्व रखते हैंवे है **श्रावणी उपाकर्म, विजयादशमी, दीपावली,और होली**। एक प्रचलित मान्यता के अनुसार श्रावणी पर्व ब्राह्मणो का पर्व माना जाता है विजयादशमी को क्षत्रियों का पर्व मानते हैं।दीपावली वैश्यों की मानी जाती है और होली को शूद्रों का पर्व कहा जाता है उपयोगिता को लक्ष्य कर यदि इन बातों का विश्लेषण करें तो स्थिति यह है - मान लिया ब्राह्मणों के लिये श्रावणी उपाकर्म है क्योंकि स्वाध्याय का चातुर्मास्य इसी पर्व से आरंभ होता है। वनों में रहने वाले वानप्रस्थ मुनिगण वर्षा ऋतु की वजह से ग्रामों में आ जाते थे और वेद कथा प्रवचन आदि के द्वारा वर्षाकाल व्यतीत करते थे इस दिन यज्ञोपवीत परिवर्तन करने की प्रथा भी पुराने काल से चली आ रही है इस दृष्टि से यदि इस पर्व के ऊपर ब्राह्मणों की मुहर लगाई जाये तब तो ठीक है। विजयादशमी का औचित्य क्षत्रियों के संबंध में यदि इस आधार पर माना जाय कि विजयादशमी से पूर्व चौमासा होता है वर्षाकाल में आबालवृद्धवनिता सब बड़ी श्रद्धा से महात्माओं के अमृत वचन सुनते थे और वर्षा की समाप्ति पर इस विजयादशमी का आयोजन होता था, जिसमें क्षत्रियगण अस्त्र-शस्त्रों को ठीक करते थे जिनमें जंग लग गया होता था फिर अपने बंधुवान्धवों से अंतिम भेंट करके विजय यात्रा में निकल जाते थे।दीपावली में आमतौर पर देश में लक्ष्मी पूजा का प्रचलन है। लक्ष्मी की प्राप्ति के नये सिरे से योजनायें बनाई जाये, लाभ-हानि को लक्ष्य कर जिनमें लाभ हो उन्हीं व्यापारों का ही अनुष्ठान हो इस प्रकार इस संबंध में कुछ हद तक ये बातें ठीक मानी जा सकती है,परंतु जहां तक होली की बात है कि शूद्रों का है,पर मानते सभी हैं,यह बात अनुचित है होली दीपावली के संबंध में यह जो उपर्युक्त मान्यता का दिग्दर्शन मैने कराया है इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह जबरदस्ती तुक भिड़ाने की अनर्थक कोशिश मात्र है। वस्तु स्थिति के साथ वास्तव में इन बातों का दूर का भी संबंध नहीं है। निष्कर्षत: वास्तविकता तो यह है कि इस देश में दो प्रकार की फसलें होती है : रबी और खरीफ। ये दोनों फसलें क्रमश: जब कट करके आती थी तो दीपावली एवं होली के पर्व मनाये जाते थे। इन पर्वों को प्राचीन शास्त्रों के अनुसार नवशस्येष्टि के रूप में यहां मनाते थे।नवशस्येष्टि का अर्थ नये अन्न से यज्ञ होता है। आइये इस नवशस्येष्टि बनाम होलकोत्सव अथवा बसंतोत्सव पर पुराकालीन साक्ष्यों के आधार पर जरा चितंन करें हमारे हिन्दू त्यौहार प्रकृति और मौसम

thearyasamaj.org

के बदलने के साथ-साथ आते जाते रहते हैं। इस प्रकार होली का पर्व भी वसंत ऋतु के साथ ही आता है। वसंत ऋतु को ऋतुराज अर्थात ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है। ऋतुराज वसंत का अविर्भाव हो चुका है वसंत ऋतु के साथ साथ प्रकृति की छटा में भी परिवर्तन आ गया है।उसका रूप दिन प्रतिदिन रम्य से रम्यतर होता जा रहा है।आज वसंत भी अपने पूर्ण यौवन पर है। वनोपवन में शहर और गांवों में सर्वत्र नयनाभिराम विकास मन को मोद से भर देता है।चराचर जगत् ने भी इसी आनन्द से प्रफुल्लित होकर नवीन बाना बदल लिया है। उद्यानों में नवविकसित कुसुमों की बहार है। और खेतों में परिपक्व यव और गोधूम के शस्यों की सुनहरी सरिता तरंगित हो रही है। पशुओं ने नवीन रोमावली के चित्र -विचित्र अभिनव परिधान धारण किये हैं। पक्षियों की चारू चहचहाहट से सुन्दर सरसता का संचार हो गया है। कलकण्ठा कोकिला की कूक मयूर की केका, तरूण तीतर का तारस्वर तथा कपोत का कलरव या कबुतरों की गुटरगूं ,वायुमंडल को मधुरिमासे परिपूर्ण कर रहा है। मलयाद्रि को धीर सुगंध समीर अठखेलियां करता हुआ चला रहा है।

ऐसे उदार और मनोहर सुसमय में आषाढ़ी शस्य के शुभागमन की शुभाशा जनता और किसानों के मन में मोद,मौज मस्ती और उल्लास भर देती है इस मास की फसल भारत की सब फसलों में सर्वश्रेष्ठ और सिरमौर गिनी जाती है। ऐसे जीवनाधार सर्वपालक शस्य फसल के आगमन पर कृषकों का मन बल्लियों की तरह उछलने लगता है।ऐसे सुखद अवसर पर आनन्दोत्सव और रंगरेलियां मनाना स्वाभाविक ही है। यह केवल भारत की ही विशेषता नहीं किन्तु सूरीनाम में भी नव शस्य के प्रवेश का उत्सव मनाया जाता है किन्तु यह भारतीय होली का उत्सव केवल अमोद-प्रमोद का ही साधन नहीं है धर्मपरायणता का भी है क्योंकि आर्य वंशजों की प्रत्येक बात में धार्मिकता और वैज्ञानिकता जुड़ी हुई है। शीतकालीन वर्षा के अनन्तर आवासों की परिष्कृति के लिये तथा वसंत की नई ऋतु बदलने पर अस्वास्थ्य के प्रतिरोध के लिये हवन से वातावरण को शुद्ध करने का अभिप्राय भी है। गीता में कहा

यज्ञशिष्टाशिन: सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषै :। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

अर्थात् नई फसल से सर्वप्रथम यज्ञ किये बिना ही जो व्यक्ति उस अन्न का सेवन कर बैठते है वे केवल पाप ही खाते हैं और इसके विपरित जो यज्ञ भगवान को हवि प्रदान करनें के उपरान्त अन्न का सेवन करते हैं वे सब प्रकार के पापों से छूट जाते है।गीता के अन्दर एक अन्य स्थान में कहा गया है कि **तैर्दत्तान्नप्रदायेभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः** अर्थात् देवों द्वारा दी गयी वस्तुओं को यज्ञ के माध्यम से उन्हें न लौटाकर सीधे सेवन आरंभ करने वाले चोर होते हैं उपर्युक्त तमाम बातों से यह जानकारी मिलती है कि यहां नवशस्येष्टि के रूप में दीपावली होली में यज्ञों की पवित्र परम्परा रही है आज भी कुछ प्रान्तों में होली के अवसर पर पहले पके चने आदि अग्नि में चढ़ाते है और अर्धपक्व यानी होलक होने पर उसका सेवन करते हैं प्राचीन यज्ञों का यह अपभ्रंश रूप ही है। आज आवश्यकता है अपनी संस्कृति के अनुरूप पर्वो के पालन करने की।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त भी आज इन पर्वों में अनेंक विकृतियों और फूहड़पन का प्रवेश हो गया है जैसे दीपावली में जुआ खेलना जबकि वेद में **अक्षैर्मा दीव्य** कहकर इसे घोर निन्दनीय कृत्य बताया गया है।इसके दुष्परिणामों का इतना विस्तृत चित्रण वेद के अंदर प्राप्त होता है जिसे पढ़कर अनायास इस महान् अनर्थ आचरण के फल का सहज ही परिचय प्राप्त हो जाता है। नवशस्येष्टि के रूप में दीपावली के अवसर पर परम पावन यज्ञ के स्थान पर पटाखे आदि छोड़कर वायुमंडल को दूषित करना एवं होली के पवित्र अवसर पर भद्दी गालियां देना रंग छिड़कना आदि पर्व की महत्ता पर तुषारपात करते हैं इन पर्वो की पवित्रता को बचाये रखने कें लिये हम सबका नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि हमें अपनी **सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा** की सुरक्षा हेतु इन पर्वों के माध्यम से केवल उन्हीं रीतियों एवं नीतियों का अनुसरण करना चाहिये जिससे अपनी प्राचीन सभ्यता की गौरवमयी झलक प्राप्त हो सके। आईये इन प्राचीन पर्वों की गुणवत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये हम सभी अपनी योग्यता,क्षमता व सामर्थ्य के अनुसार बद्धसंकल्प होकर समृद्ध समाज की संरचना में सहभागी बनें।

एतद्देशप्रसूतस्य , सकाशादग्रजन्मन:। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् , पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

– आचार्य ...

thearyasamaj.org

राष्ट्र चिन्तन

अयोग्य विवाह

समाज व संस्कृति के लिए घातक

– आचार्य आर्यनरेश,
वैदिक गवेषक

जब आर्यावर्त्त भारत में युवकों व युवतियों का विवाह परस्पर के गुण-कर्म-स्वभाव को मिलाकर एक योग्य आचार्य और आचार्या के निरीक्षण में होता था तब गृहस्थाश्रम को श्रेष्ठ तथा राष्ट्र निर्माण करने वाला बताया जाता था। भगवान अथर्ववेद में कहते हैं - **'अभिवर्धतां पयसार्भिराष्ट्रेण वर्धताम'** अर्थात् बलवान-ज्ञानवान-याज्ञिक गृहस्थों दूध-खीर खाकर बढ़ों और अपने राष्ट्र के साथ बढ़ो, तुम्हारे गृहस्थ आश्रम से राष्ट्र सब फले-फूले। तुम्हारी निरोग, चरित्रवान, बलवान व अनुशासित का आश्रम नहीं, यह भी तप करने का आश्रम है जो समाज को तपस्वी ब्रह्मचारी, गृहस्थ हेतु तपस्वी-युवा, तपस्वी वानप्रस्थ तथा सर्वस्व होम करने वाले संन्यासी राष्ट्र को देता है। महर्षि मनु कहते हैं 'गृहस्थ आश्रम इसीलिए श्रेष्ठ है क्योंकि यह उपरोक्त तीनों आश्रमियों को राष्ट्र हेतु पालता है।' महर्षि दयानन्द अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समु. में लिखते हैं कि गृहस्थ पञ्चमहायज्ञों, यमनियम योग का पालन करते हुए वानप्रस्थ व संन्यास द्वारा मोक्ष को प्राप्त हो सकता है। मोक्ष केवल विवाह न करवाने वालों के लिए ही नहीं। गृहस्थाश्रम को अथर्ववेद के अनेक मंत्रों में वशिष्ठ कहा गया है। यहां वशिष्ठ का अर्थ (वह=वहन, इष्ट = यज्ञ से पञ्चमहायज्ञादि राष्ट्रीय यज्ञों का विस्तारक है न कि) मुस्लिम कुरानियों वाला बहिश्त नहीं, जहां अनेक रखेले गुण्डे शराब की ननिदयां व भिन्न-भिन्न के मांस है। वैदिक गृहस्थ का 'वहिष्ठ' पवित्र यज्ञ है जो कि कामवासना की जलन से रहित है। जहां पति-पत्नी के रक्षक व मार्गदर्शक चाचा, चाची ज्येष्ठ भाभी व कुछ काल के लिए श्वसुर व दीर्घकाल तक सास भी होती है। जहां समय-समय पर वेद विद्वान् संन्यासी को १३ संस्कारों से योग्य बना। १४ वें १५ से राष्ट्र सेवा हेतु जीवनदानी की प्रेरणा करते हैं। जहां बालक ५ वर्ष से २४-२९ व बालिकाएँ से १६-१९ तक गुरुकुल के संयमी स्वस्थ वातावरण में नगरों के प्रदूषण व गृहस्थ की चमक-दमक से दूर रहकर उर्वश व वीर्यवान बन अपने पितरों के तुल्य राष्ट्र निर्माण व राष्ट्र सेवा में अर्पित हो जाते हैं। गुरुकुल शिक्षा में वे अरण्य की मूल्य वाले रासायनिक जड़ी-बूटियों का भी ज्ञान कर लेते हैं। ब्रह्मचर्य सात्विक भोजन (लाल मिर्च, प्याज, लहसुन अधिक नमक, शराब, मांस, अण्डे, तम्बाकु, कोका, पेप्सी, वीर्य नाशक अंग्रेजी दवाई रहित)करते और नपुसंक व बंजर भूमि ही बनते हैं। 'बल' धनुष की टंकार और पवितत्रता यज्ञ से होने पर पतिव्रत व पत्नीव्रत का नियम धारते किसी परस्त्री तथा पुरुष को स्वप्न में भी चाहना नहीं करते। इससे परिवार में संगठन, श्रद्धा, सेवा, प्यार और आचार की उन्नति से धरती पर स्वर्ग उतरता है। न कभी परस्पर झगड़ा ही होता है एवं न ही तलाक क्योंकि दो पवित्रों, निरोगों, ईश्वर भक्ति, सेवाभावियों का मिलन मात्र भोग विलास नहीं अपितु राष्ट्र निर्माण से मोक्षादान हेतु हुआ है। असत्य, अधर्म व क्रोध हेतु नहीं।

दाम्पत्य जीवन में व्यभिचार उत्तम वैदिकधर्म शिक्षा के अभाव एवं विद्यार्थीकाल के दोषों, सह शिक्षा आदि से विवाह से पूर्व प्रेम सम्बन्धों और उनसे पनपे इन्द्रिय दोषों एवं मानसिक दोषों का परिणाम है। कन्या रोगी लकोरिया प्रदर युक्त, युवक अप्राकृतिक कृत्यों से वीर्य हीन व इन्द्रियक्षीण नपुसंक। अतः कहीं स्त्री तो कहीं पुरुष तृप्ति हेतु बाहर का मार्ग पकड़ते हैं। वेश्यावृत्ति तथा परपुरुष गमन जहां परिवार को नरक, बच्चों को अवारा और समाज को कामुक बना देते हैं वहां न चाहते हुए एड्स जैसे भयंकर रोग उन्हें एवं उनकी सन्तानों को जीवित रहते ही मृत्यु के मुख में धकेल देते हैं। समलैंगिकता भी आज इसी चरित्रहीनता की देन है। विगत दिनों भारत सरकार की एड्स सर्वेक्षण सूची बताती है कि परस्त्री गमन से यदि ४७% एड्स आता है तो समलैंगिकता से ७५%। जिसे दुराचारी सरकार मान्यता दे रही है। गृह विनाशक, समाज घातक व राष्ट्र घातक व्यभिचार को बालक-बालिका के पालन पोषण से ही रोका जा सकता है।

पता – उद्‌गीथ साधना स्थली, हिमाचल प्रदेश

thearyasamaj.org

अन्धविश्वासों का खात्मा सिर्फ वैदिक सिद्धान्तों से

वैचारिक

- खुशहालचन्द्र आर्य

वैदिक धर्म में सौ नहीं दो सौ नहीं सहस्त्रों सिद्धान्त है, जो बुद्धि, तर्क व विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं यानि वेदों के सभी सिद्धान्त बुद्धिसंगत है। अन्य सभी मत, पंथ व सम्प्रदायों के सिद्धान्त केवल चमत्कारों और अन्धविश्वासों पर टिके हुए हैं। वैदिक धर्म परमपिता परमात्मा को सर्वव्यापक यानि सृष्टि के कण-कण में उपस्थित है तथा सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अजर, अमर व अजन्मा मानता है, जबकि अन्य मत, पंथ व सम्प्रदाय ईश्वर को कोई सातवें आसमान पर, कोई चौथे आसमान पर मानता है, तो शैव अपने ईश्वर को कोई कैलाश पर्वत पर मानता है तो वैष्णव अपने ईश्वर विष्णु को क्षीर सागर में एक कमल के फूल पर लेटे हुए मानता है, तो कोई अपने आराध्य देव को बैकुण्ठ में बैठा मानता है। पर ये सब निराधार है, कारण एक स्थान पर बैठ कर ईश्वर पूरी सृष्टि को नहीं देख सकता और न ही सभी जीवों के कार्यों को देखकर, उनके किये हुए अच्छे या बुरे कर्मों का फल, अच्छे कर्मों का फल सुख के रुप में तथा बुरे कर्मों का फल दुःख के रुप में नहीं दे सकता। इसलिए पूरी सृष्टि के रचयिता परमात्मा कभी भी एक स्थान पर बैठा नहीं रह सकता। उसको सर्वव्यापी, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान मानना ही पड़ेगा, जिसे वैदिक मानता है। ईश्वर का कभी जन्म नहीं हो सकता कारण वह जन्म-मरण के बन्धन से परे है, इसीलिए वह अजन्मा, अजर व अमर कहलाता है। जन्म लेने वाला प्राणी कभी भी सर्वव्यापक नहीं हो सकता।

वेद, ईश्वर को सर्वशक्तिमान व न्यायकारी मानता है। वह कठिन से कठिन कार्य में भी किसी दूसरे का सहारा व सहयोग नहीं लेता, वह स्वयं सब काम करता है। जबकि हमारे ईसाई भाई ईसा मसीह को गोड़ (ईश्वर) का एकलौता बेटा मानते हैं और ईसा में विश्वास रखने वाले को, ईसा गोड़ से सिफारिश करके अपने भक्त के सब पापों को धुलाकर उसको पूर्ण सुखी बनाता है चाहे उसके कर्म कितने भी बुरे हों, ऐसे ईश्वर को आप कैसे न्यायकारी व सर्वशक्तिमान कह सकते हैं ? ऐसे ही हमारे मुस्लिम भाई, मोहम्मद साहब को खुदा (ईश्वर) का पैगेम्बर यानि दूत मानते हैं। उनका भी यही मत है कि जो मोहम्मद साहब को खुश कर लेगा, खुदा भी उस पर खुश हो जायेगा और उसे जन्नत (स्वर्ग) में भेज देगा। चाहे उसके कर्म कैसे भी घिनौने हों। इसी प्रकार हमारे पौराणिक भाई भी किसी से पीछे नहीं। वे भी किसी देवता की मार्फत चाहे वह राम हो, कृष्ण हो, हनुमान हो और चाहे दुर्गा हो या काली हो किसी की भक्ति करने से ही स्वर्ग मिल सकता है ऐसा मानते हैं। ईश्वर की सीधी स्तुति, प्रार्थनोपासना करना कोई नहीं बतलाता। जब ईश्वर अपने किसी काम में भी किसी दूसरे का सहयोग नहीं लेता, वह अपनी न्याय-व्यवस्था से स्वयं ही सब काम करता है तो फिर किसी एकलौता पुत्र, पैगम्बर या किसी देवता को बीच का सहयोगी मानना, यह मनुष्य की अज्ञानता ही कहलाएगी जायेगी।

वेदों का एक प्रमुख सिद्धान्त यह है कि मनुष्य प्रकृति के विरुद्ध कभी कोई काम नहीं कर सकता। जैसे मनुष्य आंखों से देखता है और कानों से सुनता है। यदि कोई यह कहे कि फलां मनुष्य कानों से देखता है और आंखों से सुनता है, यह प्रकृति नियम के विरुद्ध होने से इसे सत्य मन मानो। इन असत्य और असम्भव बातों को, सत्य मानने वाले इन बातों को चमत्कार का रुप दे देते हैं। और कहते हैं कि यह पहुंचा

thearyasamaj.org

हुआ सन्त या सन्यासी है यह ऐसे चमत्कार कर सकता है। किसी ने कहा कि एक पहुंचे हुए सन्यासी को मैंने एक ही समय में कलकता, मुम्बई, दिल्ली, मद्रास और अहमदाबाद पांच जगह देखा। यह प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है कारण एक व्यक्ति एक ही समय में एक ही स्थान पर रह सकता है। यदि कोई कहे तो उसे मिथ्या समझें। वर्तमान के सभी मत, पंथ व सम्प्रदाय इन चमत्कारों के आधार पर ही अपने-अपने मत को सब से अच्छा बतलाते हैं और एक से एक मनगढ़न्त बात जोड़कर अपने मत की महात्ता सिद्ध करते हैं। जैसे ईश्वरीय नियम है कि जो जीव जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा। परन्तु ईसाई भाई कहते हैं कि आप ईसा की शरण में आ जाओ तो गोड (ईश्वर) आपके सब पाप माफ कर देंगे। यह ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है इसलिए असम्भव है। इसी प्रकार मुस्लिम भाई भी कहता है कि तुम मोहम्मद साहब को खुश कर दो तो खुदा भी तुम्हें मोहम्मद साहब के कहने से जन्नत में भेज देगा चाहे तुमने कितने भी पाप किये हों। यही बात हमारे सनातनी भाई भी कहते हैं कि आप मंदिर के दिन में दो बार दर्शन कर लो, आपको ईश्वर हर काम में सफलता देगा चाहे आप दिनभर कितना भी पाप करते रहो।

वैदिक धर्म ही एक ऐसा है जो अच्छे काम का फल अच्छा और बुरे काम का फल बुरा ईश्वर ही देता है, ऐसा मानना है। ईश्वर अपने बनाए नियमों के प्रतिकूल न तो कोई काम करता है और न ही कर सकता है कारण ईश्वर भी अपने नियमों में बन्धा हुआ है। ऐसी सच्ची बात वैदिक धर्म ही कह सकता है, अन्य मतों में इतनी सच्ची बात कहने की हिम्मत नहीं है। इसलिए हर व्यक्ति को वैदिक धर्म अपनाना चाहिए और ईश्वरीय ज्ञान वेदों के अनुसार चल कर अपने जीवन को सफल व शान्तिमय बनाते हुए मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होना चाहिए।

वैसे सृष्टि नियम के विरुद्ध चमत्कारिक बातें सभी मतों में है, जैसे मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारा पैगम्बर मोहम्मद साहब ने एक अंगुली के दो टुकड़े कर दिये, परन्तु हमारे पुराणों में सबसे अधिक चमत्कारिक बातें है। जैसे हनुमान जी ने अपने बचपन में ही सूर्य को अपने मुख में रख लिया, कुन्ती के कर्णकान से उत्पन्न हुआ, कृष्णा ने गोवर्धन पर्वत को अपनी चिटली उंगली से उठा लिया, कृष्णा ने द्रौपदी का चीर बढ़ा दिया आदि। भूत-प्रेत, गण्डा-डोरी, श्राद्ध-तर्पण, फलित ज्योतिष, ग्रहों का नाराज व खुश होना तथा मूर्ति पूजा व अवतारवाद को मानना अन्धविश्वास और पाखण्ड है कारण ये सब बातें प्रकृति नियम के विरुद्ध है। इसलिए इनको न मानकर वैदिक धर्म को मानना ही हर व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर व लाभदायक होगा।

वैदिक धर्म में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए सन्ध्या करना, प्रदुषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना, शरीर को स्वस्थ रखते हुए यम-नियमों से समाधि तक पहुंचने के लिए अष्टांग योग करना, दूसरों की भलाई के लिए परोपकार करना तथा वेदों सहित सभी आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना और उनके अनुसार जीवन बनाना आदि मुख्य सिद्धान्त है, जो तर्क बुद्धि व विज्ञान संगत कर्म है, जो मनुष्य को स्वस्थ रखते हुए सुखी जीवन बनाने में पूर्ण सहायक है। इसलिए यदि हम अपने जीवन को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो हमें अन्य मतों व पंथों को छोड़कर वैदिक धर्म को अपनाना चाहिए जिससे हम अपने ईश्वर, समाज, राष्ट्र व केवल मानव-मात्र ही नहीं, बल्कि प्राणी-मात्र के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन को सफलता की ऊंचाईयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बने। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं।

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७०००७

बेटी

चाहे मुझे प्यार न देना
चाहे मुझे दुलार न देना
लेकिन जन्म से पहले
मुझे मार न देना
मैं बेटी हूँ
मुझे भी जीने का
अधिकार देना।

thearyasamaj.org

रामनवमी पर विशेष

'मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम'

(२८ मार्च जन्म दिवस)

- डॉ. सूर्यप्रकाश मिश्र

अतुलनीया भारतीय संस्कृति की गौरव-गाथा-विश्वव्यापी मानवता की अक्षुण्ण कहानी है। इसी से आवेष्टित ही यहां के महापुरुषों ने विश्व-मानवता का संदेश दिया है। समदर्शिनी भारतीय संस्कृति की पावन कल-कल निनादिनी पुण्यसलिला मानवता की भागीरथी में विश्व का मानव अतीत से अद्यतन स्नान करता चला आ रहा है। यथा गंगा के पवित्र शीतल जल के कतिपय बूंदोंके पान से मानव तृप्त हो उठता है, वैसे ही महापुरुषों की गाथा का पठन या श्रवण कर वह दिव्य जीवन से आलोकित हो उठता है। अन्तर्मुखी चिन्तन से यह भास्वरित है कि यह संस्कृति विश्व कल्याणी है। इसी दिव्य कल्याणी महामानवी संस्कृति के शीतल जल से स्नान होकर पुरुष महापुरुष की संज्ञा से प्रसूनवत खिल उठा है। स्पष्टतः देखें तो ज्ञात होता है कि यही कल्याणी संस्कृति है जिसने पुरुष को महापुरुष की कोटि में विराजमान कर दिया है। यह महापुरुषत्व अपने अमिट कतिपय गुणों से अवेष्टित हो भगवान की संज्ञा से गुजायमान हो उठता है। युगों-युगों से कभी न समाप्त होने वाली भारतीय गौरव-गाथा त्रेता और द्वापर के दो महान विभूतियों में शाश्वतरुप से वास कर रही है। ये हैं - भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम राम! और योगेश्वर श्रीकृष्ण! भगवान्राम ने यहाँ 'रामो द्विर्नाभिभाषते' से अपने को अमर किया वहीं भगवान् कृष्ण ने ***'कर्मण्येवाधिकारस्ते'*** से।

आलेख की प्रमुख पीठ भगवान राम की वाणी है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम उद्घोष करते हैं - '**प्राण जाहिं पर वचन न जाहिं**'। राम का व्यक्तित्व, उनकी मर्यादा, उनका त्याग, उनकी शालीनता, उनकी उदारता और उनका विश्वव्यापी महामानवत्व यदि कहीं देखना है तो वह स्थल है, राज्याभिषेक की प्रथम घोषणा और फिर इस घोषणा में समायी अयोध्या। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि राम के समकालीन थे। उन्हें कोई गाथा लिखनी थी। अलौकिक दिव्य वाणी ने बलात् प्रेरित किया राम की गाथा लिखो! गाथा लिख कर वाल्मीकि जहाँ अमर हुये, वहीं राम की गाथा भी जन-जन की अटूट शक्ति सिद्ध हो गई।

राम कहते हैं, वे दो वाणी नहीं बोलते। वह वाणी लौह शलाका है, ज्योति-शिखा है, शक्ति दायिका है, प्रतिज्ञा पूर्णी है, मार्ग-दर्शिका है और वह है स्नेह-आपलाविता। राम ने जीवन में जो कहा, उसे कह कर साकार किया। उनकी वाणी सत्यनिष्ठा की अटूट शिला है। राम की वाणी भव सागर से पार कराने वाली नौका है। ऐस नौका है जिसे संसार की कोई भी उत्ताल तरंगे तिरोहित नहीं कर सकती। राम की वाणी सत्य की चादर से ऐसी आच्छादित है कि उसे उनचास पवन भी नहीं अनाच्छादित कर सकते। उनकी वाणी-वैभव का सच्चा परिचायक अयोध्याकाण्ड के राज्याभिषेक का मनोहारी दृश्य है। दासी मन्थरा द्वारा विचारों से संचालित रानी कैकेयी के कोप भवन में कोप की लीला से राजा दशरथ को वश में होने पर राम के जो उद्गार मुखारविन्द से प्रकट हुये हैं, उनका अपना लोक ही आया है। यहाँ राम का व्यक्तित्व उनकी प्रतिज्ञा के माध्यमसे अलौकिकता की संज्ञा से भास्वरित हो उठा है।

राम को यह पता लगने पर कि पिता की दारुण दशा, उनकी मानसिक अस्थिरता, उनका विलाप सब मेरे चारों ओर ही घूम रहे हैं तो वे प्रतिज्ञा चट्टान पर खड़े हो जाते हैं। राम का समस्त जीवन वैदिक मान्यताओं से ओतप्रोत है। वे सच्चे आदर्श संस्कृति के प्रतीक पितृ भक्त राम है। वे निज सर्वस्व दान कर भारतीय पितृ संस्कृति को बचाये रखना चाहते हैं। कैकेयी के द्वारा राम के प्रति कहे गये वचन दृष्टव्य है।

अहो धिङ् नार्हसे देवि वक्तुं मामीदृशं वचः।
अहं हि वचनाद्राज्ञः पतेयमपि पावके ॥

thearyasamaj.org

भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं मज्जेयमपि चार्णवे ।
नियुक्तो गुरुणा पित्रा नृपेण च हितेन च ॥

राम कहते हैं, देवि मेरे प्रति ऐसा न कहिये। हितकारी पिता, राजा, गुरु की आज्ञा से मैं अग्नि में कूद सकता हूँ, विष पान कर सकता हूँ, समुद्र में छलांग लगा सकता हूँ। ऐसा कौन से कार्य है जिसे मैं न कर सकूँ। राम पिता को असन्तुष्ट कर एक भी क्षण नहीं जीना चाहते। माता कैकेयी से कहते हैं, देवी ! पिता को जो अभीष्ट हैं उसे शीघ्र कहो ! राम दो वाणी नहीं बोलता, '**रामोद्विर्नाभिभाषते**'। राम का चरित्र, राम की गाथा, उनकी मर्यादा, उनका ऐश्वर्य और शौर्य न केवल भारत के लिए वरन् विश्व-मानव केलिए आदर्श प्रेरणा-स्रोत है। उनका राज्य सर्वतोमुखी वैभव सम्पन्न था। उनके राज्य में विधवाओं का न तो करुण कन्दन था और न हिंसक वृत्ति वालों का भय था। चोरों लुटेरों से धरा रहित थी। लोग लोभी वृत्ति के न थे। भगवान् राम के शासन-काल में अकाल मृत्यु नहीं होती थी। सभी अपने-अपने वर्णानुसार धार्मिक अनुष्ठानों में रत थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब अपने-अपने कामों को करते हुये सन्तुष्ट थे। सारी प्रजा सत्य परायण थी। लोग शुभ लक्षणों से युक्त थे। महर्षि वाल्मीकि ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है देखते ही बन पड़ता है -

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा लोभविवर्जिताः ।
स्वकर्मसु प्रवर्तन्ते तुष्टाः स्वैरेव कर्मभिः ॥
आसन् प्रजा धर्मरता रामे शासति नानृताः ।
सर्वे लक्षणसम्पन्नाः सर्वे धर्म परायणाः ॥

पूर्व में अभिहित है कि त्रेता और द्वापर (रामायण और महाभारत) की दो महती विभूतियाँ न केवल भारतभूमि उत्पन्ना मानव जाति के लिए अपितु समस्त मानवों के लिए आदर्श चरित्रों की प्रेरणा-स्रोत हैं। इनका वैयक्तिक चरित्र जहाँ निष्ठा से पूर्ण है वहीं सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक संगतियाँ एक ऐसी आध्यात्मिक भूमि प्रदान करती है जहाँ मान को स्थायित्व प्राप्त होता है। राम का जीवन लौकिक और अलौकिक विसंगतियों से भरा है। भगवान् राम सदा अपने भक्तों, उपासकों, सेवकों के साथ रहकर जहाँ मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, वहीं परीक्षक बनकर परीक्षा भी लेते हैं। सामाजिक क्षेत्र में मार्गदर्शक, राजनीतिक क्षेत्र में राजा राम, युद्ध क्षेत्र में सच्चे बीरवल, आमद क्षणों में सहायक, अभाव काल में सच्चे मददगार की भांति सदा खड़े नजर आते हैं। सबसे बड़ी बात है कि उनकी जीवन व्यापक है। व्याप्ति-व्यापक का अन्योन्याश्रित रिश्ता है।

राम को सभा में, पढ़ें, उन्हें गुने, उनके साथ चलें - तभी तोहम राम के सच्चे प्रेमी, उपासक कहलाएंगे। राम नर के हैं, नारी के हैं, पशुओं के हैं, धरा के हैं, आकाश के हैं। वे सर्वत्र व्याप्त है। वे मन्दिरों में ही नहीं उनकी सत्ता सर्वत्र है। उनका जीवन चरित्र जाग्रत, सुषुप्त दोनों आस्थाओं में सतत प्रवहमान है। जहाँ राम का रामत्त्व विश्व मानव को दृढ़ता प्रदान करता है, वहीं उनका चरित्र 'चरैवेति' की वह भूमि देता है जिस पर अहर्निश चलकर वह कभी भी थकता नहीं। ठीक ही कहा है - राम समग्र विश्व हैं, समग्र विश्व राममय है - इस चिन्तन केसाथ जीवन यात्रा में कभी थकावट नहीं आती। राम का समग्र जीवन काव्य है। उस काव्यामृत का आचमन कर लोकोत्तर का पथिक बन यही पाठ करता है - राम तुम्हारा वृत्त स्वयंही काव्य है, कोई कवि बनजाय, सहज सम्भाव्य है।

पता -प्लाट नं. १, शक्ति विहार कालोनी, पब्लिक पार्क के सामने, रिसाली, भिलाई (छ.ग.) ४९०००६

जली होलिका

जली होलिका आज, सभी को दंभ जलाने होंगे।
सुप्त भाव जो ढके राख से पुनः जगाने होंगे ॥
तृष्णा और छल छदम् जलाओ यही आज आह्वान।
स्वार्थ भाव जल जाए इसी में यही पर्व सम्मान ॥
प्रेम भाव सरसाना होगा पुनः जगाकर प्रीत।
आज गुंजाना होगा जग में अमर प्रेम संगीत ॥
शुष्क हृदय में प्रेम भाव के पुष्प खिलाने होंगे।
जली होलिका आज सभी को दंभ जलाने होंगे।
आज नेह का रंग घोलकर प्रेम भरी पिचकारी ॥
हम सभी को रंगना होगा कर पूरी तैयारी।
राग द्वेष को त्याग सब द्वन्द भगाने होंगे।
जली होलिका आज सभी को दंभ जलाने होंगे।

- समीक्षा आर्या, नन्दिनी भिलाई

thearyasamaj.org

जीवन दर्शन

काम और पूजा

★ ओमप्रकाश बजाज

बचपन से सुनते और पढ़ते आए हैं कि - ''वर्क इज वर्शिप'' अर्थात् काम ही पूजा है, उपासना है, आराधना है, ऐसे बहुत से व्यक्तियों को निकट से देखने जानने का अवसर भी मिला जो अपने काम को ही पूजा मानते थे, काम को पूजा जैसा महत्व आदर सम्मान देते थे। अपने काम को पूजा का दर्जा देते थे, ऐसे व्यक्ति आज भी है।

धीरे-धीरे इस सूक्ति में निहित गूढ़ अर्थ भी कुछ समझ में आने लगा, काम, जिस पर जीवनयापन, परिवार का भरणपोषण, समाज में प्रतिष्ठा, आत्मसन्तोष, आत्मविकास, प्रगति निर्भर है। काम, जिसके माध्यम से ही व्यक्ति समाज के विकास में, राष्ट्र की उन्नति में अपनी भागीदारी निभाता है, अपना योगदान देता है। समाज के ऋण से उऋण होता है। अपनी भीतरी क्षमताओं को उजागर करने का अवसर पाता है, देश और समाज को कुछ नया अनोखा उपयोगी देने का मौका जुटाता है। नए उदाहरण और आदर्श प्रस्तुत करता है। वह काम भला पूजा नहीं तो और क्या है।

काम केवल रोजी-रोटी का साधन मात्र मानना उचित नहीं है। काम से रोजी-रोटी तो निस्संदेह मिलती ही है, किन्तु अपने काम से हमारा सरोकार केवल पगार पाने या पैसा कमाने तक ही सीमित हो ऐसा सोचना सही नहीं है। हमारा काम जिसे हमारे दिन-प्रतिदिन के अधिकांश समय का साथ जुड़ा है। ऐसा साथ जो हमारे जीवन के लम्बे वर्षों तक निरन्तर बना रहता है। क्या इस घनिष्टतम् जुड़ाव को केवल काम करने हेतु काम करने या पैसा कमाने भर जैसा मानना या संज्ञा देना उचित होगा। हर धर्म अपने काम को पूरी निष्ठा, लगन, परिश्रम और ईमानदारी से करने का आह्वान करता है। काम से जी चुराने, कामचोरी करने, काम के प्रति गंभीर होने को गलत दृष्टि से देखा जाता है। कोई भी नया काम आरम्भ करने से पहले उसकी सफलता हेतु कामना की जाती है। अपने-अपने विश्वास एवं आस्था के अनुरुप पूजा अर्चना की जाती है। आशीर्वाद और शुभकामनाएं प्राप्त की जाती है। पुराने लोग अभी भी प्रतिदिन प्रातः दुकान, प्रतिष्ठान, कार्यालय का ताला खोलने से पहले नितान्त श्रद्धापूर्वक झुक कर दहलीज को छू कर हाथ माथे से लगाते हैं। कार्यस्थल को हमारी संस्कृति और परम्परा में इतना सम्मान दिया जाता रहा है। पुरानी इमारतें, पुरानी कलाकृतियाँ यहां तक कि पुराना फर्नीचर देखकर आज भी तबियत खुश हो जाती है। पुरानी वस्तुओं की मजबूती, बनावट, कला, सुन्दरता, शिल्प और कारीगरी को सराहते भी हम नहीं अघाते जाहिर है कि उस समय के कारीगर, काम करने वाले अपनी लगन, मेहनत, कौशल से हर वस्तु में जान डाल देते थे। वह इसलिए कि वह अपने काम को महज काम नहीं बल्कि पूजा का स्थान और सम्मान देते थे।

युग परिवर्तन के साथ, पुराने संस्कारों, मूल्यों और मान्यताओं के कमजोर पड़ने तथा नई संस्कृति एवं सोच के पनपने के साथ काम के प्रति हमारे दृष्टिकोण में भी व्यापक परिवर्तन आता गया है। काम का सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा कम होती गई है। अब काम को मजबूरी, बोझ, बेगार और बेकार का चकल्लस माना जाने लगा है। उसमें रूचि का अभाव होने लगा है। अब प्रवृत्ति यह जोर पकड़ रही है कि काम न ही करना पड़े अथवा कम से काम करके ही काम चल जाए। यह भी व्यापक नैतिक अपकर्ष एवं अवमूल्यन का ही एक रुप है। विश्वकर्मा पूजा तो हम आज भी पूरे मनोयोग से करते है किन्तु उसके पीछे निहित भावना को हम भूला बैठे हैं।

अपने निजी व्यवसाय में संलग्न व्यक्तियों एवं किसी प्रतिष्ठान में पगार पर नौकरी करने वालों की अपने काम के प्रति सोच में भी सुस्पष्ट अन्तर पाया जाता है। सरकारी, सार्वजनिक अथवा अन्य संस्थानों में नौकरी करने वालों में सामान्यतया काम के प्रति वह उत्कण्ठा, उत्साह, उमंग नहीं होती जो स्वयं अपने निजी व्यवसाय में लगे व्यक्तियों में पायी जाती है। कारण यहाँ भी वही है- हमारे मन में काम के प्रति सही स्वस्थ सकारात्मक दृष्टिकोण का अभाव।

एक बार प्रयोग के तौर पर ही सही काम को पूजा मान कर तो देखिए। काम आपको काम लगेगा ही नहीं। काम करकेनकोई थकावट महसूस होगी न तनाव। शरीर ही नहीं मन मस्तिष्क भी हल्का फूल्का प्रफुल्लित रहेगा। एक ऐसी अनजानी सी खुशी, संतोष, उपलब्धि की अनुभूति होगी जिसे शब्दों में व्यक्त कर पाना कठिन है।

पता : इंद्राणी अपार्टमेंट, २१९१-एफ, मदन महल, जबलपुर, ४८२००१ (म.प्र.)

thearyasamaj.org

आर्यसमाज में संख्यात्मक नहीं गुणात्मक विकास की आवश्यकता

- मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति, एम.ए.

संख्यात्मक नहीं गुणात्मक परिवर्तन आवश्यक

"आर्यसमाज में हमने प्रवेश किया, पर हमने आर्यसमाज प्रवेश न कर पाया। अनेक आर्यसमाजी आधे तीतर आधे बटेर की जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आर्यसमाज में आधे तरबूज व आधे खरबूजों की घुसपैठ बड़ी संख्या में हो रही है। इन घुसपैठियों के रास्तों को हमें रोकना होगा। मात्रात्मक परिवर्तन की अपेक्षा गुणात्मक परिवर्तन अधिक आवश्यक है। संख्यात्मक आधार पर संख्या का विस्तार निरर्थक सिद्ध हुआ है।" **स्वा. सोमानन्द का वाजेगांव में दिया गया अंश**

आर्यसमाज एक ऐसा क्रान्तिकारी संगठन है, जिसके माध्यम से व्यक्ति परिवार, समाज तथा राष्ट्र को चरम उन्नति के द्वार तक पहुंचाया जा सकता है। आर्यसमाज क्षेत्र किसी निश्चित सूबे प्रान्त तथा भारत राष्ट्र तक सीमित नहीं है। वेद के अनुसार **'यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्'** अर्थात यह सम्पूर्ण विश्व एक नीड़ अर्थात घोंसले की तरह है, एक घर, कुटिया या कुटुम्ब की तरह है, जिसमें निवास करने वाले सभी प्राणी-मनुष्य (स्त्री-पुरुष) परस्पर दुःख-सुख के साथी एवं परस्पर सहयोगी सदस्य है। अथर्ववेद का स्पष्ट आदेश है -

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" अर्थात् मैं भूमि-पुत्र हूँ, मेरी जननी यह पवित्र भूमि (राष्ट्र-देश) है, किन्तु मैं सम्पूर्ण पृथिवी का सुपुत्र/नागरिक हूँ। क्या विशाल दृष्टि-कोण है। संसार की किसी भी धर्म, पुस्तक में किसी भी संस्कृति-सभ्यता में इसका विशाल और बृहत्तर विचार, संस्कार उपलब्ध नहीं है। संस्कृति विश्वाचरण अर्थात् विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति वैदिक संस्कृति है। प्रसंगानुसार मंत्र में प्रयुक्त भूमि और पृथिवी इन दो पदों का अर्थ गहराई से जानने का प्रयत्न करें। तभी तो व्यक्ति की भावना संस्कार और आदर्शों का ज्ञान हो सकेगा।

इस मंत्र में प्रयुक्त पद भूमि से यह तात्पर्य है कि जिस ग्राम/नगर में मैं उत्पन्न हुआ हूँ उस ग्राम/जिला/प्रान्त तथा देश का मैं नागरिक हूँ। जिस देश की मृदा-मिट्टी से मेरा यह शरीर बना है, जिस देश में उत्पन्न दुधारू पशुओं का दूध तथा खेतों में उत्पन्न अन्न और औषधियों से यह शरीर हुष्ट-पुष्ट हुआ है, जिस देश के ऋषियों-मुनियों आप्त पुरुषों तथा महापुरुषों द्वारा प्रदत्त ज्ञान द्वारा मेरा मानसिक-बौद्धिक विकास हुआ है, उसके आध्यात्मिक उपदेशों से मेरी आत्मा का विकास हुआ है जिस देश की नदियों, तालाबों, झरनों, वनों-वाटिकाओं द्वारा मुझे विविध प्रकार का सुख प्राप्त हुआ है वे सब मेरे लिए पूज्य और प्रिय हैं। मैं उन सबके उपकारों के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। वही मेरा देश है और मैं उसका नागरिक हूँ। देशोन्नति, रक्षा-सुरक्षा के प्रति मैं सदैव तैयार रहूंगा। यदि देश सुरक्षित है, तो मेरा परिवार और समाज सुरक्षित है। एक सुरक्षित राष्ट्र में आध्यात्मिक चेतना का विकास होता है। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है।

मेरा यह प्रिय राष्ट्र इस विशाल पृथ्वी का एक भू-भाग है। इस पृथिवी पर और अनेक राष्ट्र हैं, जिनमें इस देश के समान ही स्त्री-पुरुष, पशु-पक्षी, नदी-सरोवर तथा सुन्दर समुद्र है। पृथिवी के सभी राष्ट्रों के निवासी परस्पर एक परिवार के सदस्यों के समान है। मैं अपनी मातृभूमि में रहकर कोई ऐसा कार्य न करुं, जिससे अन्य राष्ट्रों के नागरिकों को पीड़ा पहुंचे। मैं प्रथमतः अपने देश का निष्ठावान नागरिक हूँ, तत्पश्चात् इस पृथ्वी के अन्य राष्ट्रों के प्रति सद्भावना तथा समान की भावना रखता हुआ मैं विश्व नागरिक भी हूँ। इन राष्ट्रों में निवास करने वाले नागरिकों में एक ही ईश्वर की सत्ता का दर्शन करता हुआ, मनुष्यता के नाते उनका सम्मान करता हूँ। मेरे राष्ट्र के समान विश्व के अन्य राष्ट्र भी परमात्मा

thearyasamaj.org

सामाजिक अनुष्ठान में कमी

यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि समाज में स्थापित अनेक संगठनों में विविध रूचि एवं स्वभाव वाले व्यक्ति रहते हैं। यद्यपि किसी भी संगठन के उद्देश्य कभी खराब नहीं होते परन्तु उनमें व्यस्त और न्यस्त कुछ व्यक्ति अपने-अपने स्वार्थ-साधन ढूंढने लगते हैं। संगठन का आवरण ओढ़े हुए ऐसे कथित सदस्य या पदाधिकारी समाज कल्याण की अपेक्षा स्वविकास तथा संस्था के विकास में अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। बस, यही तत्व समाज की असली शक्ति का ह्रास करने लगता है। आर्यसमाज की मन्दगामी शक्ति का मूल कारण भी गुणात्मक विकास के स्थान पर संख्यात्मक विकास है। इसमें भी दोहरे जीवन व्यतीत करने वाले अधिक दोषी हैं। ऐसे तत्वों से अति सजग रहना अनिवार्य है। -लेखक

की इस भूमि पर बसे हुए हैं, इसलिए वे मेरे समान ही विश्व के नागरिक हैं।

विस्तार से इतनी महत्वपूर्ण बातें लिखने का मुख्य कारण यह कि प्रत्येक आर्य की मानसिक पृष्ठभूमि उपर्युक्त आदर्शों पर आधारित रहती है। आर्यसमाज के संगठन की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-२ के विवादों को हल करने की जिम्मेदारी तीन या चार सम्माननीय न्यायमूर्त्तियों को सौंपी गई। इन सभी सम्माननीय न्यायमूर्त्तियों ने भी वादी को कहा था - हमारी मानसिक पृष्ठभूमि और आस्थाएँ आपकी ही तरह वैदिक धर्म में है। वादी-प्रतिवादी परस्पर मिलकर न्यायालय के परिक्षेत्र से दूर-दूर रहकर इस वाद में पड़ी कठिनाईयों को स्वयं हल कर लें। अब पाठक समझ गये होंगे कि मानसिक पृष्ठभूमि का समाज में कितना महत्व है।

समस्या इस समय जटिल हो जाती है, जिस समय श्रद्धावाद वैदिक धर्मी अपने आदर्शों के आधार पर अपने संगठन को दृढ़ बनाये रखना चाहते हैं और आगे बढ़ना चाहते हैं। परन्तु संगठन में सभी श्रद्धावान और निष्ठावान नहीं होते। ऐसे तत्वों को कथित इस विशेषण को दिया जाता है। कथित सदस्यों का सहयोग तभी तक प्राप्त होता रहता है, जब तक उनके स्वार्थ पर आँच नहीं आती। संगठनात्मक नियम-उपनियम का पालन भी वे बाह्य रुप में करते दिखाई पड़ते हैं, परन्तु उनकी विचारधारा की पृष्ठभूमि और मानसिकता उससे जुड़ी नहीं रहती। बस, यहीं से उस संगठन में मतभेद के साथ मनभेद की दरारे पड़ने लगती है।

आर्यों का आदर्श तथा मत निम्नलिखित पद्यात्मक पंक्तियों में व्यक्त है- कवि अश्विनी कुमार पाठक के शब्दों में-

आर्य हमारा नाम है,
वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है,यज्ञ हमारा कर्म ॥
सत्य हमारा लक्ष्य है,
गायत्री महामंत्र है।
भारत अपना देश है,
यह सदा रहे स्वतन्त्र ॥

इतना ही नहीं एक श्रद्धालु, वैदिक धर्मी की आत्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक भावनाएँ धर्म, समाज और राष्ट्र के लिए अधोलिखित प्रार्थना की शब्दावली में है। प्रत्येक वैदिक धर्मी आर्य अपने राष्ट्र के प्रति कितना ऊँचे भाव रखता है, पढ़िये -

हे परमेश्वर ! इस पावन भारत भूमि पर कभी भी विदेशी शासन न होने इस भारत वर्ष में सदैव स्वराज्य रहे। सभी सुखों का भण्डार यह मेरा देश सदैव स्वाधीन, सम्पन्न सुखी और सम्मानित रहे। हमारा वैदिक धर्म सदैव और सर्वत्र फैले और हमें कभी भी वेद विरोधी विदेशी मत और विदेशी राजा का दास न होना पड़े। हम स्वदेश, स्वधर्म और स्वाभिमान की सदैव रक्षा करने में प्रयत्नरत बने रहें। स्वराज्य में हमारे गौरव, गरिमा और स्वाभिमान रहे।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द वेदों को स्वतः प्रमाण मानते थे जो कि बुद्धि-आधारित सिद्धान्त है। उनकी दृढ़ धारणा था कि मनुष्य अल्पज्ञ तथा कर्मबंधन से जुड़ा हुआ है, उस पर उसके पूर्व जन्मों के संस्कार सूक्ष्म शरीर में विद्यमान रहते हैं, इस कारण उनके स्वभाविक ज्ञान के अतिरिक्त नैमित्तिक ज्ञान में कहीं न कहीं त्रुटि तो बनी रहती है। वे स्वयं भी अपने आपको मनुष्यों की अल्पज्ञों की श्रेणी में रखते थे। स्वामी जी महाराज को ईश्वर, वेद और उसकी बनाई हुई व्यवस्था पर बड़ा विश्वास था। इन पंक्तियों के

thearyasamaj.org

लेखक कभी-कभी उन्हें सत्यमूर्ति कह दिया करता है।संसार में ऋत अर्थात् प्राकृतिक शक्तियां और उनके अटूट नियम तथा सत्य अर्थात लौकिक जगत के चैतन्य प्राणियों के व्यवहार तथा नियम, इन्हीं दोनों ऋत तथा सत्य का ही यह विश्व (यूनीव्हर्स) है। यह सब क्रीड़ा जगत है। सभी चक्र चलायमान है, परन्तु इन पर उस प्रभु का नियंत्रण है। वह जड़-चेतन जगत में अन्दर तथा बाहर से व्याप्त है। वह पास भी है और दूर भी है। उसकी प्रेरणा ही चैतन्य जत की अद्‌भुत शक्ति है।

उपरोक्त तथ्यों का प्रस्तुतीकरण का एक मात्र उद्देश्य यही है कि आर्य समाज में प्रविष्ट होने के इच्छुकों को ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों को भली भाँति समझ लेना चाहिए। विंगत छः दशकों से आर्यसमाज के वातावरण में रहने के पश्चात् यह अनुभव कर पाया हूँ कि आर्यों के इस असंख्य और विशाल समुदाय में प्रायः ४०-५० प्रतिशत ही आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्तों को समझते एवं तदनुरुप जीवन व्यतीत करते हैं। बस यही ४०-५० प्रतिशत आर्यसमाज की गुणात्मक पूंजी या सम्पत्ति है। शेष कथित आर्यों की कोटि में गणना करने योग्य है।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमें वर्तमान में खड़े होकर अपने स्वर्णिम 'भूत' को स्मरण करना अनिवार्य है। कोई भी व्यक्ति या परिवार अथवा समाज अपने स्वर्णित गुण-गाथा गाकर या सुनाकर जीवित नहीं रह सकता हाँ, उसमें प्रेरणा प्राप्त कर सकता है। हमारा भूत ही हमारा आदर्श है और प्रेरणा का स्रोत हो सकता है।परन्तु अपने 'भव्यम' भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए त्याग, निष्ठा, परिश्रम तथा लक्ष्य को निश्चित कर लक्ष्मण बनाना अनिवार्य है। सम्प्रति, आर्यसमाज के मञ्च तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से केवल और केवल 'स्वर्णिम भूत' की अत्यधिक चर्चा की जाती है। यदि इसे सीमित कर वर्तमान में उलझी हुई समस्याओं, संगठन की बिखरी शक्तियों कथित नेताओं के व्यवहार से सजग रहने की ओर शक्ति लगा दी जाय तो अधिक लाभ होगा। आर्यसमाज के सशक्त मञ्च तथा सबल संगठन चल-अचल सम्पत्ति देश-विदेश में बढ़ते हुए सांस्कृतिक-धार्मिक प्रभाव के कारण विभिन्न वर्गों के लोग इस ओर आने लगे हैं। इससे निःसंदेह आर्यसमाज का संख्यात्मक विकास हुआ है। आर्यसमाज की वास्तविक शक्ति उसका अपना गुणात्मक विकास है। संख्यात्मक विकास में अधिकांश ऐसे तत्व हैं जो विभिन्न अवसरों पर अपनी लौकिक स्वार्थ पूर्ति के लिए अपनी टोपियां और आवरण बदल लेते हैं। ऐसे आवरण बदलुओं से ही आर्यसमाज की वैदिक मान्यताओं पर लिखित आक्षेप करने लगे हैं, जिन्हें प्रत्युत्तर भी दिया जा रहा है। ये आरोप या आक्षेप कर्त्ता कथित पुराने आर्य है, जिन्हें लौकिक ऐषणाएँ गुमराह कर रही है। इसलिए आज आर्यसमाज के गुणात्मक विकास की वास्तविक अनुयायियों को ऋषि दयानन्द पर श्रद्धा रखने वालों की नितान्त आवश्यकता है। ध्यान रहे हमारा भूत भी स्वर्णिम और महान था और अब भविष्य भी स्वर्णिम तथा महान है। ईश्वर की कृपा का वरदहस्त भी है।

पता - सुकिरण, अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

स्मृति की रेखाएँ

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्,
पर्युत्सुकी भवति यत् सुखिनोऽपि जन्तुः।
तच्चेतसा स्मरति नूनमबोधपूर्वं,
भाव स्थिराणि जननान्तरसौहृदानि ॥

भावार्थ : कभी-कभी किसी सुन्दर दृश्य किन्हीं मधुर ध्वनियों, शब्दों को सुनकर सर्वसुखसम्पन्न व्यक्ति का भी अन्तःकरण द्रवित हो उठता है, इस अनमनेपन को क्या कहा जावे? अपरिचित के प्रति ऐसा स्नेह, इतनी करुणा दयार्द्रभाव कैसा? कुछ समझ में नहीं आता। जिससे एक क्षण का भी परिचय नहीं परन्तु ऐसा लगने लगता है कि वह जन्मजन्मान्तर का आपका स्नेही हो। कारण क्या है, इसमें। ऐसा प्रतीत होता है - कि मनुष्य की स्मृति में पूर्वजन्म की जो प्रेमानुभूतियाँ निश्चेष्ट होकर पड़ी हुई थीं वे प्रबुद्ध होकर सचेतन मन से टकरा जाती हैं। निश्चय ही पूर्वजन्म के संस्कार प्राणी को कभी-कभी यकायक उद्वेलित करते है।(हिन्दी के जनप्रिय सुप्रसिद्ध कवि श्री शिवमङ्गलसिंह सुमन की एक कविता इस सम्बन्ध में बहुत मार्मिक है) मैं तो तुम्हें पहचानता हूं। तुम न मानो जग न माने मैं तो तुम्हें पहचानता हूँ। **- सुभाषित सौरभ**

thearyasamaj.org

होली पर्व पर विशेष

“होली”आषाढ़ी-रबी फसल व ऋतु परिवर्तन के स्वागत का पर्व’

- मनमोहन कुमार आर्य

प्रत्येक वर्ष फाल्गुन महीने की पूर्णिमा को होली का पर्व देशभर में मनाया जाता है। पूर्णिमा के दिन लकड़ियों वा काष्ठ को इकट्ठा कर रात्रि में होली जलाई जाती है व उसके अगले दिन रंगों से होली खेली जाती है। यह पर्व कब आरम्भ हुआ इसका इतिहास में कहीं विवरण उपलब्ध नहीं है। इस कारण इस पर्व की प्राचीनता सिद्ध है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा पर मनाये जाने के कारण इस पर्व का विशेष महत्व है। एक प्रमुख कारण यह है कि यह पर्व आषाढ़ी अथवा रबी की फसल से जुड़ा है। भारत का प्रमुख भोजनान्न गेहूँ वा यब वा जौ है जो इस समय लगभग तैयार होकर नव-अन्न व शस्य के रुप में उपलब्ध होता है। सारे देश वा देशवासियों का पूरे वर्ष भर का जीवन इस अन्न व फसल पर निर्भर करता है। यदि अन्न न हो तो देश चल नहीं सकता। वायु व जल के बाद यदि संसार में सबसे उपयोगी कोई वस्तु है तो वह अन्न ही है। इसी लिए कहा गया है कि **‘पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि अन्नं जल शुभाषितम्’** अर्थात् पृथिवी पर सबसे श्रेष्ठ तीन पदार्थ अन्न, जल व मधुर वाणी है। प्राण-वायु का समावेश भी इनमें मान लेना चाहिये।

यह विदित है कि हमारे कृषक अपनी फसल की गुणवत्ता-वृद्धि एवं उसे प्रचुर मात्रा में उत्पन करने के लिए रात-दिन न केवल कड़ा परिश्रम करते है अपितु उसमें अच्छे व उत्कृष्ट बीजों के प्रयोग के साथ महंगी खाद का प्रयोग भी करते हैं। अतः यदि फसल आशानुरुप तैयार होती है तो कृषकों का प्रसन्न होना स्वाभाविक ही है और यदि फसल आशा रुप न हो तो कृषकों का निराश होना भी स्वाभाविक ही है। अन्य देशों में भी नई फसल के तैयार होने पर उसके स्वागत में पर्व मनाये जाते हैं। ऋतुराज रुस के हिमाच्छादित देश में फसल काटने पर कृषक अपने इष्ट मित्रों को पकवान से परितृप्त करके उत्सव मनाते हैं। भुवन-भास्कर की भूमि जापान में भी जब धानों की फसल कटती है तब धान की सुरा और चावलों की रोटियों के सहभोज होते हैं और गानवाद्यपूर्वक पर्व मनाया जाता है। यूरोप के सेन्ट वेलन्टाइन का दिन और इंग्लैण्ड में मे पोल (May Pole) के उत्सव भी इसी प्रकार के होते हैं। वस्तुतः इस प्रकार के उत्सव ग्रामीण कृषक जनता में ही प्रचलित है।

अतः फसल के पक जाने से पूर्व ही नई फसल के स्वागत में होली का पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन भारत में मनाया जाता आ रहा है। इस पर्व का नाम होली क्यों है ? यह भी हम भूल चुके हैं। आषाढ़ी फसल के नवशस्यों को तिनकों की अग्नि में भूना जाता है। ऐसे अधपके शमीधान्य (फली वाले अन्न) को होलक वा होला कहते हैं। इन अधपके नवागत यवों के द्वारा अग्नि में यज्ञ वा होम करने के कारण इसे **‘होलकोत्सव’** कहते हैं। अग्नि में होलकों की आहुति इस आशय से दी जाती है कि सभी देवताओं को यह नवान्न प्राप्त हो सके। वैदिक साहित्य में अग्नि एक देवता है और यह अन्य सभी देवताओं का मुख है। हमें जिन देवताओं को भी अपना कोई प्रिय खाद्य पदार्थ देना व समर्पित करना होता है, उसे अग्नि देवता को यज्ञ द्वारा अर्पित कर देते हैं। अग्नि में समर्पित पदार्थ अग्निदेवता अन्य सभी जड़-चेतन देवताओं को पहुंचा देते हैं और वह तृप्त हो जाते हैं। इसके बाद नवान्न को समाज के श्रेष्ठ विद्वानों जो सभी लोगों को विद्या व ज्ञान प्रदान करते हैं, क्षमा, त्याग की मूर्ति है व गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार ब्राह्मण हैं, उन्हें यह अन्न प्रस्तुत व भेंट किया जाता है। आजकल हमारे कृषक भाई वेद विद्या के शिक्षण केन्द्रों गुरुकुलों आदि में आषाढ़ी की फसल का अन्न पहुंचाते हैं। यह भी होली का ही एक भाग अथवा अंग है। इसके बाद कृषक उत्पादित अन्न का भोग स्वयं व अपने परिवार को करा सकते हैं, यह प्राचीन मर्यादा है जिसमें धर्म के गहन तत्व

thearyasamaj.org

छिपे हैं। **इन होलों की यज्ञ में आहुति के कारण ही इस पर्व का नाम होली प्रचलित हो गया है।** कालान्तर में लोगों ने अनेकानेक राजसिक व तामसिक गुणों से प्रभावित आचरण तथा मदिरापान, अनेक अभद्र आचरण व व्यवहारों को भी इस पर्व के साथ जोड़ दिया है, जिन्हें इस पर्व की विकृतियां ही माना जा सकता है। इन अभद्र आचरण व व्यवहारों का त्याग करना व शालीनता पूर्वक पर्व को मनाना ही सभ्यजनों का कर्त्तव्य है।

होली का पर्व के अवसर पर शिशिर ऋृतु का प्रभाव समाप्त हो चुका होता है तथा बसन्त ऋृतु पूर्ण यौवन पर होता है। अब सर्दियों में पहने जाने वाले ऊनी गरम वस्त्रों की आवश्यकता समाप्त हो गई है। बसन्त के अनुसार हल्के श्वेत वस्त्रों की आवश्यकता पड़ती है, अतः उनका प्रबन्ध कर उन्हें तैयार करना होता है। जो सर्दियों की ऋृतु व्यतीत हो चुकी है वह मनुष्यों सहित हमारे पालतू गाय आदि पशुओं के लिए कठिनतर थी और जो जब विद्यमान है व आने वाली है वह शारीरिक सुखानिभूति की दृष्टि से अच्छी है, अतः इस ऋृतु परिवर्तन का भी स्वागत उल्लास व प्रसन्न मन से किया जाता है।

मनुष्य को ईश्वर ने पांच ज्ञानेन्द्रियों व पांच कर्मेन्द्रियों से नवाजा है। आंखे ज्ञान इन्द्रिय है जो अच्छे सात्विक दृश्य को देखकर प्रसन्न होती है। प्रसन्नता का स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। प्रसन्न व्यक्ति को रोग व दुख बहुत कम सताते हैं। इसी का प्रतीक वसन्त ऋृतु भी है। सभी वृक्ष अपने पुराने पत्तों को छोड़कर नये पत्ते से मानों नया परिधान धारण कर श्रृंगार किये हुए इस पर्व को मनाते हुए प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार से वनों में औषधियां भी उत्पन्न हो गयी है जो रोगियों के लिए दुख निवारण व सुखों की प्राप्ति कराने वाली होती है। इस कार्य में संलग्न व इतर विवेकी पुरुष भी इस उपलब्धि पर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। सभी फूलों के पौधें अपने पूर्व पत्तों को त्याग कर नये रंगीन व मनमोहक पुष्पों व पत्तों से वसन्त ऋृतुराज का स्वागत करते हुए दिखते हैं। ऐसा लगता है कि प्रसन्नता से नाच रहे हैं। पुष्पों की अद्भुत सौन्दर्य व नाना रंगों को देख कर मनुष्य भी मन्त्रमुग्ध व रोमांचित होते हैं। इन रंग बिरंगे फूलों की ही तरह मनुष्य भी होली के पर्व पर नये-नये रंगों को एक दूसरे के चेहरे पर लगाकर व पुष्प-इत्र को जल में मिलाकर रंगीन जल को एक दूसरे पर डालकर उन्हें रंगीन कर देते हैं, जिससे कुछ पलों के लिए प्रसन्नता का अनुभव होता है। यह एक प्रकार होली को सांकेतिक रुप से प्रकट करता है कि फूलों की भांति हमने भी वसन्त ऋृतु का स्वागत किया है।

होली के अवसर पर सभी पशु अपनी पुरान रोमावली को त्याग कर नई रोमावली को नये परिधान के रुप में धारण करते हैं अथवा प्रकृति व परमात्मा की ओर से उन्हें यह नया परिधान प्राप्त होता है, जिससे वह मन ही मन प्रसन्नवदन होकर होली मना रहे होते हैं। पक्षी समूह भी होली के पर्व के अवसर पर अपने पुराने **'पर व पंखों'** को झाड़कर नवीन पक्षावलि का परिच्छद पहनते हैं। यह भी उन्हें परमात्मा प्रदान करता है। इस प्रकार से न केवल मनुष्य अपितु समस्त पशु, पक्षी तथा वनस्पति जगत सहित समस्त प्राणीजगत होली का पर्व अपनी-अपनी प्रकार से मनातेहैं। होली प्रेम के प्रसार का भी पर्व है। इसे क्रियान्वित रुप से देने के लिए इस दिन वैर-भाव को भूलकर लोग एक दूसरे के घर जाकर चेहरे पर रंग लगाकर व गले मिलकर सभी स्त्री व पुरुष एक दूसरे को शुभकामनायें व बधाई देकर इस प्रेम प्रसार को सुदृण व व्यापक रुप देते हैं, यह इस पर्व का विशेष पक्ष है।

इस पर्व से जुड़ी राजा हिरण्यकश्यप, उसकी बहन होलिका व पुत्र प्रहलाद् की पौराणिक कथा भी प्रचलित है। कथानुसार राजा हिरण्यकश्यप को अभिमान हो गया और उसने ईश्वर की पूजा बन्द करवा दी और अपनी पूजा कराने लगा। उसका अपना ही पुत्र प्रहलाद उसका विरोधी हो गया, जिसे सजा देने के लिए राजा ने अपनी बहिन की सहायता ली। बहिन होलिका को यह वरदान मिला हुआ था कि अग्नि का उस पर कोई प्रभाव नहीं होगा। अतः राजा की आज्ञानुसार वह पुत्र प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि पर बैठ गई। परिणाम यह हुआ कि होलिका जल कर नष्ट हो गई परन्तु सच्चे ईश्वर भक्त प्रहलाद पर अग्नि का कोई प्रभाव नहीं हुआ। यह कल्पित दृष्टान्त सच्ची ईश्वर की पूजा के महत्व को प्रतिपादित करता है। इस कथा को ही होली का पर्व मनाने में आधारभूत कारण बताया जाता है। विवेक बुद्धि से इसका

thearyasamaj.org

उद्देश्य यह ज्ञात होता है कि अहंकार से सभी अनुष्यों को बचना चाहिए और सच्ची ईश्वर की पूजा करनी कर्त्तव्य भाव से यथासमय चाहिए। हमने होली के कई पक्षों पर विचार कर उसके कारणों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। लेख की समाप्ति पर पं. श्री सिद्धगोपाल कविरत्न काव्यतीर्थ जी की निम्न प्रभावपूर्ण कविता प्रस्तुत है -

ऋतुराज वसन्त विराज रहा, मनभावन है छवि छाज रहा।
बन-बगन में कुसुमावलि की, सुखदा सुषमा वह साज रहा॥
यव गेहूं चना सरसों अलसी, सब ही एक आज अनाज रहा।
यह देख मनोहर दृश्य सभी, अति हर्षित होय समाज रहा॥
उपलक्ष्य इसे करके जग में, शुभ-होलक-उत्सव हैं करते।
अधपक्व, यवाहुति दे करके, सब व्योम सुगन्ध से हैं भरते॥
सब सज्जन-वृन्द अतः जग में, नव सस्य-सुयज्ञ इसे कहते हैं
कुल-वैर विसार स्नेह-सने, हुलसे सब आपस में मिलते॥
चर पान इलायचि भेंट करें, निज मित्र-समादर हैं करते।
हृदयंगम गायन-वादन से, मुद से सब हैं मन को भरते॥

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

तेजस्वी भजनोपदेशक - ***पं. वेगराज आर्य***

(संस्मरण)

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज की लगभग पचास छोटे बड़े पत्र पत्रिकाएं निकलती है किन्तु आर्य संसार (कलकत्ता) को छोड़कर शायद ही किसी पत्र ने ९० वर्षीय इस अनुभवी तेजस्वी तथा विद्वान् भजनोपदेशक के परलोक गमन का नोटिस लिया हो। वे ०७ अगस्त २०१४ को परलोक प्रस्तान कर गये। आधी शती से भी अधिक हुआ पं. वेगराज का नाम सुना और बाद में अनेक स्थानों पर उनको उत्सवों आदि देखा सुना। धोती, गांधी टोपी व कुर्ता उनकी स्वाभाविक पोशाक थी। बहुत सास्वत न होने पर भी वे आर्य मत और वैदिक सिद्धांतों से सुपरिचित थे।

रामायण आदि इतिहास प्रधान काव्यों की सरस कथा वे अनेक स्थानों पर कर चुके थे। एक बार आर्यसमाज सेक्टर २२ चंडीगढ़ में प्रातः सत्संग (रविवार) में प्रवचन कर रहे थे। मैं भी अपने घर से साइकिल पर सवार होकर आर्य समाज मंदिर में प्रविष्ट हुआ तो उनकी नजर मेरी साइकिल पर पड़ी। जब मैं मंचस्थ हुआ तो विषय क्रम में ही कहने लगे - मैंने सोचा था दयानन्द वेदपीठ पंजाब वि.वि. के प्रोफेसर तो कम से कम कार में आयेंगे। चण्डीगढ़ वालों ने इस वैदिक विद्वान् से न्यून से न्यून कार तो दिलाई ही होगी।

जिस समय विशाल भवन पर नजर पड़ती है तो उसकी विशालता तथा भव्यता तो हमें आकर्षित करती है किन्तु उस नींव पर हमारी दृष्टि में कार्य करने वाले तथा ऋषि दयानन्द के समकालीन और प्रत्यक्ष दर्शन करने वाले पं. अमीचंद से लेकर वर्तमान में पं. ओमप्रकाश वर्मा तक सैकड़ों भजनीक हुए हैं, किन्तु कौन जानता है कि इनका नाम इतिहास के पृष्ठों में अंकित रहेगा या काल के विशाल गाल में समा जायेगा। पं. वेगराज भी उस कोटि के उपदेशक थे, जिनकी जीवन पद्धति तथा कार्य को सदा याद रखा जाना चाहिए। वे देश-धर्म तथा समाज के समक्ष प्रस्तुत प्रवक्तों को बड़ी सूक्ष्मता से जनता के सामने पेश करते थे।

१९७७ में जनता पार्टी के शासन के स्वल्प समय के लिए राजनीति में भी गये, किन्तु वहां का वातावरण उनके अनुकूल नहीं था। अन्त तक वे धर्म प्रचार को ही तरजीह देते रहे। मैंने पचासों जलसों में उनके साथ व्याख्यान दिये थे।

उनका ढोलकी वादक श्री मोहनलाल शिष्ट, शालीन तथा विद्वानों का आदर करने वाला है। यह संगीतज्ञों की जोड़ी स्मृति पथ से कभी विलुप्त नहीं होगी। वियुक्त आत्मा को हमारा सश्रद्ध प्रणाम।

- पता : ३/५, शंकर कालोनी, श्रीगंगा (उ.प्र.)

thearyasamaj.org

बलिदानी शौर्य को नमन

मातृभूमि को दिलाने मुक्ति जो कमाया नाम
बलिदानी शौर्य की कमाई को नमन है,
वरमाल की बजाय फांसी को गले में डाला
आजादी के युद्ध के जमाई को नमन है,
जिसने अमर क्रान्ति ज्वाल को जन्म दिया
पुण्य कोख वाली ऐसी माई को नमन किया,
इंकलाब जिन्दाबाद वाले घोष को नमन
भगत की क्रान्ति-तरुणाई को नमन है।

जिनके लहू ने रचा क्रान्ति वाला इतिहास
जलियांवाले बाग के वीरों को नमन है,
शान्ति औ अहिंसा के विचारों को नमन है,
आजादी की डोली के कहारों को नमन और
लाला जी की पीठ के प्रहारों को नमन है,
तुम मुझे खून दो औ मैं तुम्हे आजादी दूंगा
दिल्ली चलो वाली ललकारों को नमन है।

हमको उजाला देते-देते जो बुझे हैं, उन
दीपकों की पावन कतारों को नमन है,
मातृ-वंदना के गीत-गाते चूम लिए
उन फांसी वाले पुण्य हारों को नमन है,
बलिदानी स्वरों की पुकारों को नमन मेरा
कोल्हुओं से बही तेल धारों को नमन है
क्रांतिकारियों ने जहाँलिखा वन्दे मातरम्
सेल्यूलर जेल की दीवारों को नमन है।

- गजेन्द्र सिंह सोलंकी

नवसम्वत् हो मंगलकारी

नव संवत् हो मंगलकारी, जन जन में आये सद्बुद्धि।
परहित के भावों की मन में, सहसा हो अभिवृद्धि॥

मंगलमय हो नव संवत्सर, मंगलमय हो घर आंगन।
मंगलमय हो इस धरती का, सत्य-शिव-सुन्दर कण कण॥

आज हमारे अन्तस्थल में प्रेम भाव हो पुनः प्रदीप्त।
करुणा क्षमा सहिष्णुता से, अर्न्तमन हो फिर उदीप्त॥

भाव शत्रुता के मिट जाये, उर में जागे मित्र भावना।
पूर्ण सदा हो मानव मन की इच्छा के अनुकूल कामना॥

राम कृष्ण की, दयानन्द की परम्परा हो फिर जीवित।
करें परस्पर स्वच्छ हृदय से, एक दूसरे का हम हित॥

मिटे नये इस संवत्सर में, फैला जो अन्याय अनय।
सभी दिशायें हो मंगलमय, जन जन हो वसुधा पर निर्भय॥

मानवता के मंगलकारी पथ पर ही अब बढ़े चरण।
सच्चरित्रता का ही हम सब, जीवन पथ पर करें वरण॥

भ्रष्टाचार मिटे, जिसने है किया राष्ट्र को अब अक्रान्त।
जागृति का नवमंत्र मिले अब, जागे मानव मन उद्भ्रान्त॥

रुदन मिटे इस वसुन्धरा का छा जाये कुल हर्षोल्लास।
स्वार्थवाद को दे तिजाञ्जलि, जगे धरा पर नूतन आश॥

मानवता की जय का डंका बजे पुनः भूमंडल पर।
जन जन हित की मंगलकारी, आया यह नववर्ष संवत्सर॥

प्रणेता
स्व. राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ.प्र.)

thearyasamaj.org

सांस्कृतिक

नारी सम्मान

- प्रो. सुभाषचन्द

गतांक से आगे

२. विधवा विवाह :- युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुये सैनिक अथवा अकाल मृत्यु को प्राप्त हुये युवाओं की पत्नियों की सामाजिक स्थिति दयनीय हो जाती है और विधवा निःसंतान हो तो यह स्थिति और अधिक भयावह होती है। इसका कारण होता है एकाकीपन।

दैनिक जीवन में सभी अपने-अपने क्रियाकलापों में व्यस्त रहते हैं और उत्सवों के अवसर पर विधवायें उपेक्षित हो जाती है और भरण-पोषण तथा सम्मान की रक्षा की व्यवस्था के लिये उनके पुनर्वास की व्यवस्था के लिये विधवा विवाह की व्यवस्था थी।

उसके लिये एक परम्परा है जो प्रत्यक्ष रुप से असंगत दिखाई देती है परन्तु वास्तव में वह बहुत सारी अथवा यूँ कहना चाहिये समस्त समस्याओं का समाधान है। वह परम्परा है रस्म पगड़ी। इस परम्परा में किसी व्यक्ति की मृत्यु के उपरान्त उसकी जिम्मेदारियों का हस्तान्तरण होता है। उस परिवार के सुयोग्य व्यक्ति को यह हस्तान्तरण किया जाता है।

सामान्यतया उस परिवार का ज्येष्ठ पुत्र ही सुयोग्य होता है अतः उसे ही पगड़ी पहनाई जाती है और समाज के वरिष्ठजन ही उसे पगड़ी पहनाते हैं और वही व्यक्ति पूरे परिवार की जिम्मेदारी उठाता है।

इन जिम्मेदारियों में विधवाओं के सम्मानपूर्वक जीवन निर्वाह की भी एक व्यवस्था रहती है। रामायणकाल में महाभारत विभीषण और महाराज सुग्रीव इस परम्परा के पालन के प्रतीक है। और महाभारत में महाराज युधिष्ठिर, इस्लाम धर्म के उदय तक महाराज हर्षवर्धन इस परम्परा के प्रतीक है।

पृथ्वीराज चौहान के काल तक राजनैतिक परम्परायें नारियों का सम्मान करती थी और दैनिक जीवन में रस्म पगड़ी परम्परा में सभी समस्याओं का समाधान था।

आज भी सामाजिक जीवन में जब कभी किसी विधवा के लिये बैठना शब्द का प्रयोग होता है उसका तात्पर्य विधवा विवाह से ही होता है। अर्थात् विधवा विवाह हमारे समाज में स्वीकार्य है। उसका नाम भले ही कुछ भी हो। परन्तु जिस प्रकार सती प्रथा को रोकने के लिये कानून बना। विधवाओं के सम्मान की रक्षा के लिये कोई कानून नहीं बना।

सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि हमारी परम्पराओं के अपभ्रंश अर्थात् बिगड़े हुये रुप को देखकर नकार दिया गया और योजनाबद्ध तरीके से अपमानित और तिरस्कार कर दिया गया। अन्यथा उपनिषदों में वर्णित सत्यकाम कथा इसी तरह की समस्याओं का समाधान है।

(३) नारी शिक्षा :- नारी शिक्षा को भी हिन्दू संस्कृति अथवा ग्रामीण संस्कृति के दोषों के रुप में प्रचारित किया गया है। इस प्रकार का प्रचार इतने अच्छे ढंग से प्रायोजित किया गया है कि प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा हिन्दू समाज विशेष रुप से ग्रामीण समाज नारी शिक्षा का घनघोर विरोधी है। यहां पर यह स्पष्ट कर दूं कि हमारा शहरी समाज हिन्दू शब्द से चिढ़ता है तथा उसे इसमें साम्प्रदायिकता की दुर्गंध आती है। यहां पर समझने के लिये एक उदाहरण है - हम अंकल चिप्स खाते है तो गौरवान्वित महसूस करते हैं परन्तु जब घर के बने हुये चिप्स खाते हैं तो उसमें प्रतिष्ठा कम होती प्रतीत होती है। कैसा मनमोहक मायाजाल है। ऐसा ही मायाजाल नारी शिक्षा को लेकर निर्मित किया गया है। हमारे धर्म में और समाज में वास्तविक रुप से कभी भी शिक्षा का

thearyasamaj.org

विरोध नहीं किया गया।

हर युग में रामायणकालीन, महाभारत कालीन अथवा मौर्य काली गार्गी, अनुसुईया, कैकेयी मादरी, कुन्ती, द्रौपदी संयोगिता, जीजाबाई, लक्ष्मीबाई आदि अनगिनत उदाहरण है जो नारी शिक्षा को प्रमाणित करते हैं। इनमें से जन साधारण से लेकर राजवंश की नारियां है। हाँ इतना अवश्य है कि प्राथमिकतायें भिन्न-भिन्न रही है। यह एक सर्वमान्य तथा सार्वभौमिक सत्य है कि पारिवारिक व्यवस्था में परिवार की आंतरिक व्यवस्था नारी संभालती है और बाह्य व्यवस्था पुरुष संभालता है। जिन जातियों और सभ्यताओं में नारी प्रधान व्यवस्था व्याप्त रही है वहां वह समीकरण इसके विपरीत है। इसलिये हमारी संस्कृति के प्रभाव वाले क्षेत्रों में घरेलू व्यवस्था को चौका-चूल्हा के नाम से संबोधित किया गया है और लड़कियों अथवा कन्याओं को पहले इसमें पारंगत होने पर जोर दिया जाता है।

इसी को पाश्चात्य सभ्यता में होटल मैनेजमेंट, हास्पीटेलिटी, कस्टमर सर्विस के नामों से संबोधित कर सम्मानित करने का सफल प्रयास है और हमारी हिन्दू संस्कृति को उपेक्षित कर प्रताड़ित किया गया है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्राथमिकता के क्रम में चौका-चूल्हा पहले आता है और अन्य क्षेत्र बाद में और बिना चौके चूल्हे अर्थात् के कोई मीटिंग भी पूरी नहीं होती और कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय अथवा नीतियां निर्धारित नहीं होती।

दहेज प्रथा :- विवाह के समय पितृपक्ष की ओर से जाने वाले उपहार दहेज कहलाता है। इस उपहार को बहुत लम्बे से अर्थात् कन्या के जन्म से सहेजकर रखन आरंभ कर दिया जाता है। सहेजना अर्थात् योजनाबद्ध तरीके से संभाल कर रखना। इसलिये इसे सहेज कहते हैं। परन्तु विवाह में कन्या के साथ दान शब्द जुड़कर कन्यादान की रस्म होती है इसलिये इसे दहेज का नाम दिया गया है। इसमें कोई बाध्यता अथवा विवशता नहीं होती।

दहेज का आधार समर्पण और सामर्थ्य अर्थात् कन्यापक्ष अपनी सामर्थ्य के अनुसार कन्या को समर्पित करता है और कन्या को वर को सौंपा जाता है। अतः प्रत्यक्ष रुप से यह वर पक्ष को भेंट किया जाता है। अर्थात् वर को दिया जाता है। ध्यान रखने योग्य बात है कि इसमें कभी भी भय, आतंक और विवशता नहीं है। परन्तु विभिन्न कारणों से दहेज का भ्रष्ट रुप से अर्थात् अपराधिक रुप ही प्रचारित किया जाता है और हिन्दू धर्म को अपमानिता कर दिया जाता है। अर्थात् अन्य धर्मों को श्रेष्ठ प्रमाणित कर दिया जाता है। वास्तव में दहेज प्रथा हमारे धर्म की श्रेष्ठ परम्परा है। अपवादों को नकार कर इसकी श्रेष्ठता को स्वीकार करना चाहिए।

भ्रूण हत्या :- भ्रूण हत्या एक ऐसा कलंक है जिसे धोना बहुत मुश्किल है। इसका कारण है कि एक ओर हम कन्या पूजन करते हैं तो दूसरी ओर कन्या की गर्भ में ही हत्या कर देते हैं। हमारे विरोधी इसे बढ़-चढ़ कर प्रसारित करते हैं। यह दुर्घटना तो सबको नजर आती है परन्तु इसके पीछे की विवशता और दुर्भाग्यपूर्ण कहानी नजर नहीं आती। इस दुर्घटना के पीछे हमारी पराजय का इतिहास और उसके कारण उपजी शर्मिंदगी, असुरक्षा की भावना छिपी हुई है।

विदेशियों के हाथ मिली हर पराजय विपदाओं और अपमानों की बाढ़ लेकर आई। इसका शिकार सर्वदा कन्याओं और नारियां ही रही है। इस अपमान को हमारा समाज वहन नहीं कर सकता और सामर्थ्य का अभाव होने से सुरक्षा भी नहीं दे सकता था। परिणाम यह हुआ कि एक मध्य मार्ग चुना गया जिसके कारण जनमानस में यह धारणा स्थायी रुप से बैठ गई कि संतान के रुप में पुत्र ही होने चाहिये क्योंकि कन्या के रुप में जिम्मेदारियां ज्यादा होती है। तथा समाज के पथ प्रदर्शक समूह ने भी इस दुर्भावना का विरोध नहीं किया अपितु अनेक कारणों से इसे उचित ही ठहराया गया।

जब हमारे समाज में खोया हुआ आत्मविश्वास जाग जायेगा उस दिन यह कलंक भी हर जायेगा। इसके विशेष प्रयत्न करने होंगे। इसके लिये आवश्यक है कि हमारी सामाजिक चेतना जाग जाये और सामर्थ्य अर्जित हो जाये। जिस दिन यह दोनों आवश्यकतायें पूरी हो जायेगी उस दिन हमारी संस्कृति अपना गरिमाशाली स्थान प्राप्त कर लेगी।

बाल विवाह :- यह एक और परम्परा जिसका उपयोग तथा कथित उदारवादी लोग, पुरजोर विरोध करते हैं और हिन्दू धर्म विरोधी लोग व्यंग्य करते हैं। परन्तु इस परम्परा के उद्गम और सामाजिक स्वीकृति के कारणों पर विचार नहीं किया

thearyasamaj.org

जाता है। बाल विवाह अपरिपक्व आयु के बच्चों का विवाह है। जिसके अंतर्गत अल्पआयु में ही दो बच्चों का विवाह कर दिया जाता है। पश्चिमी भारत में विशेष रुप से राजस्थान में यह प्रथा प्रचलित है।

इस प्रथा में विवाह के बाद गौना भी होता है। और यह तब होता है कि जब दोनों वर और वधू व्यस्क हो जाते हैं इसलिये इसे दूसरी शादी भी कहा जाता है। इसका तात्पर्य है कि वैवाहिक रस्मों के बाद कन्या अपने माता-पिता के घर वापिस आ जाती है और पूर्ववत् जीवन व्यतीत करती है। परन्तु दो परिवारों में एक संबंध स्थापित हो जाता है। व्यस्क होने पर ही कन्या अपनी ससुराल जाती है।

हमारे वेदों में शिक्षा के पश्चात् विवाह का प्रावधान है। इसके अनुसार लड़की की आयु १८ वर्ष स्वीकृत की गई है और इसी का अक्सर उल्लेख किया गया है। कन्या की आयु न्यूनतम आयु १६ वर्ष मानी गई है। जब आरंभ प्रथा का उद्गम पर विचार करें। इस्लाम धर्म के उदय के बाद इसके प्रचार के अभियान शुरु हो गये थे। अपने धर्म के प्रचार-प्रसार का प्रयास में किसी को आपत्ति नहीं है। परन्तु इस्लाम का आधार, अन्य धर्मों के प्रति नफरत है। इसलिये इसके प्रसार का माध्यम युद्ध ही थे। और युद्ध में पराजितों को या नष्ट कर दिया जाता था अथवा बहुत अपमानजनक तथा बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया जाता था।

पराजित राज्यों और क्षेत्रों की महिलाओं के साथ व्यवहार की तो कोई सीमा ही नहीं होती थी और इस अपमान तथा क्रूरतापूर्ण व्यवहार को धर्मांध मौलवियों और खलीफाओं की स्वीकृति थी तथा राजा से सम्मानित किया जाता था। अतः इस पर कोई अंकुश नहीं था। पुरुष या तो युद्ध में मारे जाते थे अथवा गुलाम बना लिये जाते थे और बचे खुचे लोग जंगलों में भाग जाते थे। इन परिस्थितियों में स्त्रियों और बच्चे ही उनके हाथ पड़ते थे।

अन्य राज्यों के लोग अपने संकुचित दायरे के कारण, निष्पक्ष रहते थे अथवा अतिथि धर्म के कारण मुगलों को आक्रमाणकारियों को शरण देते थे। इस समस्या के समाधान के लिये बाल विवाह की प्रथा का प्रारंभ हुआ। इस प्रथा से दो परिवाचों के लोग मिलकर एक कन्या की सुरक्षा के लिये तत्पर हो जाते थे। जबकि विवाह के पूर्व कन्या को केवल एक परिवार की सुरक्षा ही मिलती थी। इस विवाह के आधार पर ही दो राज्य एक दूसरे के साथ मिलकर आक्रमणकारियों से अपनी सुरक्षा करते थे।

मुहम्मद गौरी के आक्रमण से पूर्व यह प्रथा पूर्णतः सफल रही परन्तु मुहम्मद गौरी के आक्रमण के समय स्वार्थवश अंधे से लेकर जयजंद ने मुहम्मद गौरी का साथ दिया और इसके बाद भारत का इतिहास ही बदल गया। परन्तु सामाजिक स्तर पर यह व्यवस्था पूर्ण रुप से प्रभावशाली थी, विपत्ति के समय एक क्षेत्र के निवासी अपने संबंधियों के क्षेत्रों में पलायन कर जाते थे।

अन्तर्जातीय विवाह :- यह प्रथा भी प्राचीन है। वेदों में अन्तर्जातीय विवाह का विशेष उल्लेख नहीं है। वहां पर योग्यता तथा आपसी सहमति मुख्य आधार है। सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के लिये जो व्यवस्थायें बनाई गई उनका सुचारु रुप से पालन होता रहे।

इस बात को प्राथमिकता दी गई है। परन्तु महत्व वर और वधू की स्वीकृति और सहमति का है। संभावित अन्तर्कलह से बचने के लिये यह स्वीकार किया गया कि कन्या अपने से उच्च कुल में ही वधू बनकर जाये।

पता - २ डी, WHD हास्टिल सेक्टर, सेक्टर-९, भिलाई ४९०००९

आर्य अभिनन्दन

आर्य समाज के उपदेशक एवं भजनोपदेशक, जिनकी आयु ६० वर्ष अथवा उससे ज्यादा हो गयी है, हम उन सबका इसी वर्ष में अभिनन्दन करेंगे। आप अपना फोटो, कार्यक्षेत्र, अन्य सूचना भेजें। एक पुस्तिका भी छापी जायेगी। पत्र व सूचना देने का पता :-

ठाकुर विक्रम सिंह

ए-४१, द्वितीय तल, लाजपत नगर-२, निकट लाजपत नगर, मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली -११००२४

thearyasamaj.org

भूमिका : आज सब कि हमारे देश की सरकार "बेटी बचाओं आन्दोलन" चलाने पर मजबूर है, कारण विकृत मानसिकता और सामाजिक परिस्थितियों के होते हुये माता के गर्भ में पल रही बेटियों को जन्म लेने से पूर्व ही मार दिया जाता है, यही नहीं हमारे देश में लाखों बेटियों को उनके माता-पिता अपने ऊपर एक बोझ समझते हैं, ऐसे में मैं अगर गर्व से कहता हूं कि मैं तीन पुत्रियों का पिता हूं जो कि मेरी मेरे लिए वरदान हैं व सर्वोत्तम पूंजी हैं, तो इस का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनके द्वारा सन् १८७५ में स्थापित आर्यसमाज को है।

"मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऋणी हूँ।"

प्रासङ्गिक

- भारतेन्दु सूद

आज सब कि हमारे देश की सरकार **"बेटी बचाओं आन्दोलन"** चलाने पर मजबूर है, कारण विकृत मानसिकता और सामाजिक परिस्थितियों के होते हुये माता के गर्भ में पल रही बेटियों को जन्म लेने से पूर्व ही मार दिया जाता है, यही नहीं हमारे देश में लाखों बेटियों को उनके माता-पिता अपने ऊपर एक बोझ समझते हैं, ऐसे में मैं अगर गर्व से कहता हूं कि मैं तीन पुत्रियों का पिता हूं जो कि मेरी मेरे लिए वरदान हैं व सर्वोत्तम पूंजी हैं, तो इस का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनके द्वारा सन् १८७५ में स्थापित आर्यसमाज को है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने समय से कैंसर रोग के समान भयानक रुप से समाज को कमजोर करने वाली सभी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा था। महर्षि ने उस समय जबकि भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी, स्त्री पुरुषों की समानता, स्त्रियों की शिक्षा व उनके परिवार के संचालन में उनकी प्रमुख भूमिका को सही सन्दर्भ में प्रस्तुत कर क्रान्ति की थी। उन दिनों अधिकतर महिलायें अपने घरों में भी गुलामों की भांति रहा करती थी। महिलाओं और दलितों को वेदों और दूसरे शास्त्रों के अध्ययन से रोकने वाली अनधविश्वासों से परिपूर्ण व्यवस्था को स्वामी जी ने अपने पैरों तले रौंद डाला और घोषणा की कि सभी स्त्रियों व दलितों को शिक्षा व वेदों के पढ़ने-पढ़ाने का ब्राह्मणों के समान ही अधिकार है। उन्होंने कहा वेद सब के लिये है, सभी को वेदाध्ययन का अधिकार है, जन्म-जाति, रंग भेद और भौगोलिक सीमाएं इसमें बाधा नहीं हो सकते।

उनका कहना था कि शिक्षा स्त्रियों की सभी समस्याओं के निवारण के लि रामबाण औषधि है। हमारा समाज इस अशिक्षा के कारण ही दुर्बल हुआ है। आज महर्षि दयानन्द सरस्वती को स्वर्ग सिधारने के १३२ वर्ष बाद यह सिद्ध हो चुका है कि उनके इस सम्बन्ध में कहे गये वचन सत्य थे। उनसे प्रेरणा लेकर, उनके भक्तों ने उनकी असामयिक मृत्यु के कुछ ही समय बाद पंजाब में प्रथम महिला विद्यालय आर्य कन्या महाविद्यालय जालन्धर की सन् १८८९ में स्थापना कर उसे पूरा किया। यही नहीं, उनके अनुयायियों द्वारा एक हजार से अधिक डी.ए.व्ही. संस्थायें एवं गुरुकुल देश के हर कोने में खोले जो शिक्षा के प्रचार व प्रसार के कार्य में लगे हुये और यही सभी शिक्षा संस्थायें उनके सच्चे स्मारक हैं।

मैंने उनसे सीखा कि माता व पिता को अपनी पुत्रियों का ध्यान रखने वाला सच्चा सहृदय मित्र व संरक्षक होना चाहिए और यह भी जाना कि हम अपनी पुत्रियों को सबसे बड़ा यदि कोई उपहार दे सकते हैं तो वह शिक्षा एवं अच्छे संस्कार ही है।

आज यदि मैं घर में बैठा हुआ या फिर यात्रा करता हुआ भी ईश्वर से जुड़ा हुआ रहता हूँ तो यह भी स्वामी दयानन्द जी का ही प्रभाव है, जिन्होने बताया कि ईश्वर निराकार, अजन्मा, सर्वव्यापक और सर्वान्तियामी है। उसको कहीं बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं है अपितु वह हमारे अन्दर ही है बात केवल अन्दर झांकने की है। हम उपासना द्वारा ईश्वर से जुड़ सकते हैं। चाहे मुझ पर कितनी बड़ी मुसीबत आन पड़े

thearyasamaj.org

या बहुत बड़ा प्रलोभन हो, मैं किसी भी हालत में न किसी चमत्कारी बाबा के पास जाता हूं न जाऊंगा, यह महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा का ही प्रभाव है।

एक अन्य लाभ जो मुझे उनकी शिक्षाओं से हुआ है, वह यह कि सत्य को सर्वोपरि स्वीकार करना और तर्क से सत्य की पहचान करना। इससे मैं सभी प्रकार के अन्ध विश्वासों से मुक्त हो गया। मुझे किसी धर्म गुरु या ज्योतिषी के पास किसी अच्छे दिन या मुहूर्त पूछने जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरे लिए सभी दिन एक समान है व सभी दिन अच्छे दिन है और मेरे जीवन का वर्तमान समय मेरे लिए सबसे अच्छा समय है। जब कोई व्यक्ति सत्य को सर्वोपरि मान कर उसे अपने जीवन में धारण करता है तो वह स्वतः निर्भय व निडर हो जाता है। यह सत्य ही जीवन में प्रसन्नता, सुख व आनन्द का कारण है। अंत में मैंने उनसे यह जाना कि सभी मनुष्य जन्म से समान है। मनुष्य विद्या अध्ययन कर व शुभ गुणों को धारण कर ही ब्राह्मण बनता है जिसमें उसके जन्म व कुल आदि का महत्व नहीं होता। इस ज्ञान ने मुझे सभी प्रकार के पक्षपात व अन्यायपूर्ण व्यवहारों से बचाया है व मुझे सबल व सक्षम भी बनाया है।

पता : वैदिक थाट्स चण्डीगढ़

सन्त-वाणी भय के आगे घुटने न टेको

भय मानव जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है जो भी परीक्षा की घड़ी जो भी संकट जो भी अभाव तुम्हारे जीवन में आया है उससे कदापि न डरें, उसका डटकर मुकाबला कीजिए। यदि आप में दृढ़ संकल्प है व गजब का आत्मविश्वास है तो भय को ही आपसे भयभीत होना होगा। अतः यह भूल जाइए कि आने वाली विषम परिस्थितियां आपका कुछ बिगाड़ पायेगी। परेशानियां एवं अभाव मूर्ख लोगों को ही डरा सकती है। आत्मविश्वासी व्यक्ति का कुछ नहीं बिगाड़ पाती। जब भी मनुष्य भयभीत होता है तो वह भूला देता हैकि इस ब्रह्माण्ड का रचयिता इसका पालक एवं संचालक भगवान ही उसका रक्षक है। हमें अपने दिल में यह बात बिठा लेनी चाहिए कि भय नाम की वस्तु अवास्तविक है कोरी कल्पना है इससे अधिक कुछ भी नहीं। विषमता एवं निराशा के विचारों को अपने दिल से निकाल दो,आपके दिल में यदि आशा एवं विश्वासपूर्ण विचार होंगे तो निराशा एवं हताशा रुपी गन्दे विचार आपके दिन में प्रविष्ट हो ही नहीं सकते। सदैव ऐसी कोशिश करो कि आपके दिल का छोटे-से छोटा कोना भी पल भर के लिए खाली न रह सके। मन को सदैव सुन्दर एवं स्वस्थ विचारों से भरपूर रखो। उसमें दसैव रचनात्मक एवं आशावादी विचार रखिए। अपने मन में इस कदर शुभ विचार भर दो कि इसमें अशुभ विचार प्रविष्ट ही न हो सके। ऐसी हालत में वह खुद ही लौटकर वापिस हो जायेंगे। आपके दिल में यदि कभी उत्साह कम करने वाले विचार पनपने लगें तो महापुरुषों के विषय में विचार करना हितकर रहेगा। अपने दिल में उनके जीवन की घटनाओं को दोहाइए।

आपकी योजनाओं के विपरीत जो भय समाया हुआ है वह मिथ्या है आपके दुर्बल मन की कोरी कल्पना है बहुत से लोगों के स्वभाव में कायरता होती है लेकिन वे लोग इसे अपने उत्साह एवं निश्चय से दूर कर सकते है अपनी आत्मा के स्वरुप को अगर आप ध्यान से देखें तो आपको मालूम होगा कि वह पूर्ण रुप से निर्भय है तथा उत्साह एवं आत्मविश्वास के भावों से ओत-प्रोत है दुनिया की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो उसे हानि पहुंचा सके इसी शक्ति को कायरता को दूर करने के लिए दिल में बसाइए। यदि आप गंभीरता से सोचेंगे तो आपको यह बात का मालूम हो जायेगा कि मनुष्य भयभीत क्यों होता है। वह बेहद जरुरी है कि आप परमपिता परमात्मा पर भरोसा करके संदेहात्मक वृत्तियों को सदैव ही खुद से दूर रखें आप जो चाहें करें लेकिन भय के आगे घुटने न टेकिए।

thearyasamaj.org

आर्य पथिक पण्डित लेखराम

पुण्य स्मृति

- डॉ. अशोक आर्य, ११६, मित्र विहार, मण्डी डबवाली, (हरियाणा)

वर्ष-१८५०-६० की दशाब्दि में भारत के अनेक नेताओं, विचारकों व समाज सुधारकों का जन्म हुआ। इन्हीं में से ही एक आर्य पथिक पंडित लेखराम जी का जन्म सैदपुर, जिला झैलम (पाकिस्तान) में ८ चैत्र १९२५ विक्रमी को हुआ। पिता पंडित तारासिंह जी के यहाँ जन्में इस बालक का नाम लेखराम रखा गया। पंडित जी आरम्भ से ही निर्भीक कर्मठ व तेजस्वी थे। इसी कारण आर्यसमाज के इतिहास में उन्हें बहुत ऊँचा स्थान मिला। मुगल काल में तो अनेक धर्मवीर हकीकतराय के समान शहीद हुए, किन्तु अंग्रेजीकाल में मुसलमानों के हाथों शहीद होने वाला यह प्रथम वीर था। इनका जीवन सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

अपने आप को ब्रह्म मानने वाले पंडित लेखराम जी १७ मई १८८१ को अजमेर में महर्षि दयानन्द सरस्वती को मिले। यहाँ शंका समाधान होने पर सत्य को जान गए। पेशावर में पादरी जोक्स ने कहा कि बाईबल में प्रभु को पिता कहा है ऐसा अन्यत्र नहीं मानते। पंडित जी ने तत्काल उत्तर दिया वेद व प्राचीन ऋषि ही नहीं गुरु नानक जी ने भी ईश्वर को पिता ही नहीं माता भी कहा है। माता का त्याग पिता से अधिक होता है। सम्भवतया इसी कारण ही ईसा को मुसलम पुत्र न कह मरीय पुत्र कहा है। इसी प्रकार अजमेर में फादर ग्रे ने कहा '**बाईबल से चोरी करके वैदिक शिक्षा का नाम देते हो, जबकि वेद में अच्छी शिक्षा नहीं है।**' उन्होंने यह भी कहा कि हम ईश्वर को पिता कहते हैं, यह शब्द तुमने बाईबल से ही लिया है। इस पर पंडित जी ने वेद की ऋचा **ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।** यजुर्वेद का ३२-१० मन्त्र सुनाते हुए बताया कि परमात्मा बन्धु, पिता, माता, सब कार्यों को पूर्ण करने वाला सब लोक, स्थान व जन्मों को जानने वाला है। इस पर पादरी चुप हुए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के देहावसान पर आर्य समाज मुल्तान ने उन्हें महर्षि का जीवन वृत्त लिखने का अधिकार दिया। इस जीवन सम्बन्धी घटनाओं को एकत्र करने के लिए पंडित जी ने लम्बी-लम्बी यात्राएँ कर १००० पृष्ठ की सामग्री एकत्र की। जोधपुर के स्व. श्री भैरव सिंह जी के अनुसार "मैं हैरान हूं कि महर्षि के जीवन सम्बन्धी ऐसा सत्यान्वेषण पंडित जी ने कैसे किया ? जो बातें जोधपुर के इतिहास में दी है, वह सब महर्षि के इस जीवन में भी हैं। यह पण्डित जी की विचित्र सूझ का ही परिणाम है।"

पण्डित जी ऋषि जीवन एकत्र करते हुए भी सदा आर्यसमाज का प्रचार करते रहते थे। उन्होंने अपना जीवन आर्य समाज की धरोहर मानकर कार्य किया। धर्म व जाति की रक्षा को वह अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। इस हेतु अपनी जान की परवाह न करते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के पश्चात् सर्वाधिक धर्म प्रचार व शुद्धि करने वाले पंडित लेखराम ही थे। अनेक शास्त्रार्थों में पराजित होकर दुःखी मुसलमान उनकी जान के पीछे हाथ धोकर पड़ गए। एक बार वह लम्बी यात्रा के पश्चात् लौट अभी घर आए ही थे कि तार मिला कि कुछ लोग मुसलमान होने वाले हैं। पण्डित जी ने खाना छोड़ा (बिस्तर उठाया) तथा जाति की रक्षा के लिए चल दिये। जिस गाड़ी में बैठे वह गाड़ी उनके गन्तव्य स्थान दोराहा नहीं रुकती थी। पंडित जी चलती गाड़ी से कूद पड़े। चोटें तो आई परन्तु इस बात की खुशी थी कि उन्होंने विधर्मी होने जा रहे जाति के लोगों को धर्मच्युत होने से बचा लिया।

गुरु गोबिन्द सिंह के पुत्रों की बलिदान स्थली चमकोर देखने की इच्छा थी। उनके पास से नौका द्वारा निकलते हुए, नौका से कूद पड़े तथा बलिदान स्थली देखकर वापिस आकर नौका में सवार हो गए। ऐसे धुनके धनी थे पण्डित जी ! गुरु नानक जी को मिर्जा गुलाम अहमद ने मुसलमान लिखा तो सिखों में खलबची मच गई। इसका उत्तर पंडित जी ने अपने व्याख्यान में दिया। इस पर सिखों ने पंडित जी को कन्धों पर उठा लिया। पंडित जी को न कभी शोक अनुभव हुआ और न मोह। वह अद्वितीय विद्वान्, ओजस्वी वक्ता, धार्मिकता व साहस के कारण सबका हृदय जीतने वाले थे। उन्हीं के प्रचार व प्रभाव का परिणाम था कि मुसलमान निरन्तर उनकी शरण में आने लगे। अतः एक धर्मान्ध मुसलमान ने उस समय उन्हें छुरा घोंप कर शहीद कर दिया, जब वह अलमारी से उसी के लिए एक पुस्तक निकाल रहे थे। मरते-मरते भी पण्डित जी ने अपनी वाणी से कहा 'आर्यों कभी व्याख्यान व लेखन में रुकावट न आने देना।'

thearyasamaj.org

होमियोपैथी से "स्वाइन फ्लू" का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, होमियोपैथिक चिकित्सक,
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

स्वाइन-फ्लू एक वाइरस के द्वारा होने वाला संक्रमण है। यह स्पर्श द्वारा बहुत ही तेजी से फैलने वाला संक्रमण है और यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेजी से फैलती है। स्वाइन-फ्लू का वायरस सुअर से मनुष्य में आया है और अब यह एक मनुष्य से दसरे मनुष्य में तेजी से फैल रहा है। इसे एच-१, एन-१ फ्लू, पिग फ्लू, होग फ्लू, स्वाइन-इन्फ्लुएन्जा भी कहते हैं। सबसे पहले स्वाइन-फ्लू का अप्रैल २००९ में युनाईटेड स्टेट में पता चला था।

लक्षण :- स्वाइन-फ्लू के लक्षण सामान्य फ्लू के सामान ही होते हैं जैसे - (१) बुखार (२) खांसी (३) गले में दर्द (४) नाक से पानी बहना (५) शरीर में दर्द होना (६) ठण्ड लगना (७) सिरदर्द होना (८) थकान महसूस होना (९) भूख नहीं लगना (१०) कुछ लोगों को दस्त और उल्टी भी हो सकती है।

इसके अलावा भी कुछ और लक्षण हो सकते हैं जैसे - बच्चों में (१) सांस लेने में तकलीफ (२) उल्टी होना (३) बुखार के साथ रेशेज होना। बड़ों में : (१) सांस लेने में तकलीफ (२) सीने या पेट में दबाव (३) थकान (४) कमजोरी।

कैसे फैलता है स्वाइन-फ्लू :- स्वाइन-फ्लू एक सामान्य फ्लू की तरह ही फैलता है जैसे - (१) संक्रमित व्यक्ति की खांसी या छींक से। (२) स्वाइन-फ्लू से संक्रमित व्यक्ति की चीजों को छूने से।

किसको ज्यादा खतरा है एच-१ एन १ से :- (१) गर्भवती महिलाओं को (२) एक साल से कम उम्र के बच्चों को (३) ६५ से अधिक उम्र के लोगों को (४) हार्ट के रोगी को (५) एचआईवी से पीड़ित व्यक्ति को (६) बहुत लम्बे समय से किसी रोग से पीड़ित व्यक्ति को जिसका इम्यून सिस्टम कमजोर हो गया हो (७) हास्पिटल में काम करने वाले डाक्टर, नर्स और अन्य कर्मचारी।

कैसे बचें स्वाइन-फ्लू से :- (१) खांसते या छींकते समय नाक व मुंह पर टिशू-पेपर रखें और बाद में ठीक से कचरा पेटी में डालें। (२) खांसने या छींकने के बाद हाथ साबुन से धोएं। (३) संक्रमित व्यक्ति को छूने के बाद अपने आँख, मुंह और नाक को न छुएँ क्योंकि इनसे संक्रमण जल्दी फैलता है। (४) स्वाइन-फ्लू से संक्रमित व्यक्ति से दूरी बना कर रखें। (५) अगर आप स्वाइन-फ्लू से संक्रमित हैं तो स्कूल या आफिस न जाकर घर पर ही रहें।

स्वाइन फ्लू के लक्षण :-

(१) होम्योपैथी में रोग के नाम से कोई दवा नहीं होती है, रोगी के लक्षण के अनुसार दवाइयां दी जा सकती है। मांस खाने के कारण होने वाले रोग, सांस लेने में तकलीफ, नाक से पतला पानी जैसा बहे, आंखों में जलन हो, तेज ज्वर के साथ बेचैनी, कमजोरी लगे, बुखार कभी ठीक हो जाता है। कभी फिर से हो जाता है। बहुत तेज प्यास लगती है।

(२) अचानक से और तीव्र गति से होने वाला बुखार, जिसमें बहुत ज्यादा शारीरिक व मानसिक बेचैनी होती है। बहुत ज्यादा छींके आना, आंखे लाल सूजी हुई, गले में दर्द व जलन।

(३) सारे शरीर में दर्द रहता है। रोगी नींद जैसी हालत में पड़ा रहता है, सिरदर्द, खांसी, जुकाम, आंखों में दर्द, सिर के पिछले भाग में दर्द, सिरदर्द के साथ गर्दन व कंधे में दर्द, छींके, गले में निगलने में दर्द, बुखार में बहुत जाता कांपता है, प्यास बिलकुल नहीं लगती, चक्कर आते हैं।

(४) प्यास बहुत ज्यादा लगती है, सारे शरीर के मसल्स में दर्द जो कि हिलने-डुलने से बढ़ता है और आराम करने से ठीक होता है। सिर दर्द के साथ पसलियों में

thearyasamaj.org

दर्द, सूखी खांसी, उल्टी के साथ छाती में दर्द, चिड़चिड़ा होता है, गले में दर्द होता है, बलगम रक्त के रंग का होता है।

(५) धीमा बुखार, मसल्स में बहुत ज्यादा दर्द, सांस, पेशाब, पसीना आदि सभी स्त्राव से बहुत ज्यादा दुर्गन्ध आती है। महामारी के रुप में फैलने वाला इन्फ्लुएन्जा। लगता है कि शरीर टूट गया है, बड़बड़ाता है, बात करते-करते सो जाता है, मुंह में कड़वा स्वाद, गले में खराश, दम घुट जाने जैसा लगे, कमजोरी बहुत ज्यादा लगे।

(६) सर्दी जुकाम, चक्कर बहुत ज्यादा छीके, नींद नहीं आती है, आंखे लाल व जलन करती है, नाक से पतला बहता पानी, सर्दी के कारण सुनने में तकलीफ, गले में बहुत ज्यादा दर्द, गरम चीजें खाने-पीने से आराम, सूखी खांसी।

(७) नाक से तीखा स्त्राव, माथे में दर्द, आंखे बहुत ज्यादा लाल व पानी गिरता है, पलकों में जलन, कान में दर्द, छींके, नाक से बहुत ज्यादा पानी आता है, गले में दर्द, जोड़ों में दर्द होता है।

(८) इन्फ्लुएन्जा के सात सारे मसल्स व हड्डियों में दर्द, छीके, गले व छाती में दर्द, बलगमयुक्त खांसी।

नोट :- होम्योपैथी में रोग के कारण को दूर करके रोगी को ठीक किया जाता है। प्रत्येक रोगी की दवा उसकी शारीरिक और मानसिक अवस्था के अनुसार अलग-अलग होती है। अतः बिना चिकित्सकीय परामर्श यहां दी हुई किसी भी दवा का उपयोग नहीं करना चाहिए।

प्रमुख औषधियां :- **आर्सेनिक अल्बा, ब्रायोनिया, फेरमफास, युपटोरियं, बेलाडोना, एकोनाइट, नक्स वोम आदि** दवाईयां होमियो चिकित्सक के सलाह से लेकर रोग पर नियन्त्रण व सफलता पायी जा सकती है। **रोगी को धैयता के साथ रोग का सामना करना चाहिए घबराना नहीं चाहिए।**

नोट :- होम्योपैथी की प्रतिरोधक औषधियां लेने से रोगों के गंभीर आक्रमण से बचा जा सकता है।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध, रायपुर ४९२००१ (छ.ग.)

प्रभु को जानो

ईंट पत्थर से बनती ईमारतें सारी
नहीं पूजा करते कोई इनकी पुजारी
जब प्रभु हर जगह क्यों इसे बांधते हो
क्यों नहीं अपने मन भीतर झांकते हो
प्रभु शरणा आके दूर ताप कर लो
सही स्वरुप ईश्वर का गर जाना होता
निराकार उसको प्यारे गर माना होता
प्रतिमा ना कभी ईश्वर की हम बनाते
मानव सा उसको ना कभी हम सजाते
बस मंदिर में ईश्वर को हम मानते हैं
अतिरिक्त इसके प्रभु नहीं जानते
कोई पश्चिम में ही घर खुदा का बताते
उधर मुड़ करके ही प्रभु को ध्याते
संकीर्ण हो गई है बस दृष्टि हमारी
रह गई है सिमट कर बस सृष्टि हमारी
जब निराकार ईश्वर को मानेंगे सारे
ना होंगे मंदिर मस्जिद के तब बंटवारे
सब जगह व्यापक है सबमें समाया
जहां जिधर देखो उसकी है माया
पूरब या पश्चिम की प्यारे बात नहीं है
कोई जगह बता दो वो जहां नहीं है
कहीं बैठ ईश्वर को याद करो प्यारे
वो हर हाल देगा सबको सहारे
दामन थाम उसका बढ़ते है जाना
सबका ही दाता जो उसको है माना
अपनी दृष्टि में जरा विस्तार लाओ
मजहबों के सारे झगड़े ही मिटाओ
वो एक है सभी का तो क्यों भेद हम में
फिर रखते हो प्यारे खेद मन में

रचयिता : मोहनलाल चड्डा
१७३, एम.आई.जी., हुडको भिलाई

thearyasamaj.org

समाचार प्रवाह

राजिम कुंभ मेले में विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक रामकथा सम्पन्न

राजिम। राजिम कुंभ में दिनांक १० फरवरी से १७ फरवरी २०१५ तक छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं छत्तीसगढ़ स्थित समस्त आर्यसमाजों के संयुक्त तत्वावधान में राजिम की पावन भूमि पर विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक रामकथा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दिनांक १२ फरवरी २०१५ को विश्व शांति महायज्ञ के उपरांत ईश्वर भक्ति विषय पर प्रभावशाली व्याख्यान एवं भजनोपदेश सम्पन्न हुआ। जिसमें सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, उपमंत्री श्री रवि आर्य, कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य, पं. वासुदेव व्रती, आर्यसमाज बिलासपुर के श्री जयदेव शास्त्री, श्री जगबन्धु शास्त्री, श्री ईश्वरचन्द्र शास्त्री, श्री भगवानदास आर्य, श्री रामनाथ आर्य, श्री प्रभात आर्य, श्री मनोज साहू, श्री बीरबल आर्य (वैदिक प्रचारक) आदि सहित अन्य आर्यजन उपस्थित रहे। मुख्य आकर्षण का केन्द्र योगाचार्य अशोकानन्द जी द्वारा योग, प्राणायाम का प्रदर्शन प्रतिदिन किया गया।

दिनांक १३ फरवरी २०१५ को दोनों समय यज्ञ एवं भजनोपदेश कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज के दूसरे नियम पर आधारित ईश्वर के स्वरुप विषयक प्रभावशाली व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम में सभा द्वारा क्रय की गई प्रोजेक्टर के माध्यम से सायंकाल ६ बजे से ८ बजे तक महर्षि दयानन्द की जीवनी एवं "सत्य की राह" पर आधारित दृश्य श्रव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जो अत्यन्त सफल रहा। लगभग ६०० की लोगों की उपस्थिति रही।

दिनांक १४ फरवरी २०१५ को दोनों समय विश्व शांति यज्ञ एवं भजनोपदेश दिया गया। वैदिक गृहस्थाश्रम पर आधारित कार्यक्रम प्रोजेक्टर के माध्यम से सम्पन्न हुआ। जिसमें सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री जगबन्धु शास्त्री, श्री ईश्वरचन्द्र शास्त्री, श्री रामनाथ आर्य, श्री बीरबल आर्य (वैदिक प्रचारक) आदि सहित अन्य हजारों श्रद्धालु आर्यजनों की उपस्थित रही।

दिनांक १५ फरवरी २०१५ को सभा के उपमंत्री श्री सुधीर गुप्ता एवं आर्यसमाज बिलासपुर के अन्य पदाधिकारी व सदस्यगण, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के पदाधिकारी एवं आर्यसमाज टाटीबन्ध के पदाधिकारी, शिक्षक, शिक्षिकाओं व छात्राओं सहित १५० लोगों उपस्थिति में दोनों समय विश्व शांति कल्याण महायज्ञ एवं भजनोपदेश पं. नन्दकुमार आर्य (ग्राम पथरौंधा सतना म.प्र.) का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, आचार्य जगबन्धु शास्त्री, श्री प्रभात आर्य, पं. ईश्वरचन्द्र शास्त्री, बीरबल आर्य, श्री रामनाथ आर्य आदि के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा।

इसी प्रकार दिनांक १६ एवं १७ फरवरी २०१५ को वेद प्रचार कार्यक्रम प्रभावशाली रहा, जिसमें अच्छी उपस्थिति रही। सभा पदाधिकारियों सहित मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, पं. काशीनाथ चतुर्वेदी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन दिनांक १७ फरवरी २०१५ को भव्य रुप से महाशिवरात्रि ऋषि बोध दिवस के रुप मनाया गया। *- निजी संवाददाता*

सूचना

आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव
एवं अन्य शुभ अवसरों
पर वैदिक भजनोपदेश हेतु

पं. नन्द कुमार आर्य

से सम्पर्क करें।

पता : ग्राम पथरौंधा, पो. पतवारा,
जिला–सतना, (म.प्र.) ४८५४४६
मोबा. ९७५३८६२०५८, ८८२७०६४९२३

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस बोध रात्रि (महाशिवरात्रि) पर आर्यसमाज बिलासपुर में विविध कार्यक्रम सम्पन्न

बिलासपुर । आर्यसमाज, आर्यसमाज महिला इकाई, दयानन्द विद्यालय एवं दयानन्द सेवाधाम धर्मशाला न्यास बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस, बोध रात्रि (महाशिवरात्रि) के पावन अवसर पर १४ से १७ फरवरी २०१५ तक विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ फाल्गु कृष्ण दशमी को महर्षि दयानन्द चौक अशोक नगर बिलासपुर में दयानन्द जन्मोत्सव के साथ हुआ। इस अवसर पर श्री वेदप्रकाश अग्रवाल जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन गाथा का वर्णन करते हुए कहा कि ऐसे महापुरुष का जन्म हजारों वर्षों में एक बार होता है। वे वेदों के प्रकाण्ड विद्वान्, महान योगी, अद्वितीय समाज सुधारक एवं क्रांतिकारी महापुरुष थे। आपका जीवन समाज के लिए प्रेरणा का विषय है।

आर्यसमाज के पुरोहित पं. जयदेश शास्त्री ने महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों का विस्तृत वर्णन करते हुए उनके बताए पथ पर चलने का आह्वान किया तथा वैदिक धर्म की रक्षा हेतु सतत् प्रयत्नशील रहने का सुझाव दिया। वेलेन्टाइन डे की यथार्थता पर प्रकाश डालते हुए आपने इसे भारतीय संस्कृति के लिए घातक बताया।

दिनांक १४ से १७ फरवरी के बीच ऋषि गाथा भजन प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, वैदिक प्रश्नोत्तरी, वैदिक चलचित्र प्रदर्शनी, दयानन्द बाल मेला के साथ दयानन्द विद्यालय के बच्चों का रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। बोध दिवस के पावन अवसर पर महाशिवरात्रि को प्रातः ८ बजे प्रभात फेरी निकाली गई। तत्पश्चात् यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। जयघोष, शांति पाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में दयानन्द विद्यालय के बच्चे, शिक्षिकायें, आर्यसमाज के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल, मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं।**

– दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८

thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में आर्यवीर दल एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं आर्यसमाज टाटीबन्ध का वार्षिकोत्व सम्पन्न

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज टाटीबन्ध एवं महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में महर्षि दयानन्द सेवाश्रम प्रागंण टाटीबन्ध रायपुर में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

दिनांक २१ जनवरी से २६ जनवरी २०१५ तक आर्यवीर दल एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर का वृहद आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण से किया गया। इस अवसर पर सभा मंत्री सहित अन्य पदाधिकारी व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। शिविर में प्रशिक्षित व्यायाम शिक्षकों के द्वारा आसन, प्राणायाम एवं आत्म सुरक्षा सिखाया गया। इस शिविर में श्री कपिलदेव शास्त्री उपसंचालक आर्यवीर दल छ.ग. एवं आचार्य मुकेश शास्त्री का विशेष मार्गदर्शन व सहयोग रहा।

दिनांक २४ जनवरी से २६ जनवरी तक विश्व कल्याण महायज्ञ एवं आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर का वार्षिकोत्व का शुभारम्भ शुक्रवार को ३.०० बजे यज्ञ, प्रवचन व सत्संग से हुआ। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव जी थे। कार्यक्रम में प्राचार्य श्री विनोद सिंह एवं विद्यालय के सभी शिक्षक/शिक्षिकायें एवं छात्र/छात्राओं के साथ सभी अभिभावक गण उपस्थित थे। दिनांक २५ जनवरी को भव्य रैली निकाई गई, जिसमें विद्यालय के शिक्षक/शिक्षिका एवं छात्र/छात्राएँ उपस्थित थे। इस अवसर पर सभा के पदाधिकारी व अंचल के विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

दिनांक २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसके मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य के द्वारा ध्वजारोहण किया गया। समारोह अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह, उपाचार्य श्री पुरुषोत्तम सिंह वर्मा, आर्यसमाज टाटीबन्ध के प्रधान श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, मंत्री श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव, कोषाध्यक्ष डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्यालय के छात्र/छात्राओं द्वारा मार्च पास्ट, आसन, व्यायाम प्रदर्शन किया गया।

वार्षिकोत्सव के अवसर विश्व कल्याण महायज्ञ का तीन दिवसीय आयोजन किया गया, जिसकी पूर्णाहुति दिनांक २६ जनवरी १५ को यज्ञ, हवन, प्रवचन एवं भजनोपदेश के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में सभा प्रधान आचार्य अंशदेव आर्य, आचार्य कर्मवीर शास्त्री (सम्पादक अग्निदूत), पं. कांशीनाथ चतुर्वेदी (संयोजक संस्कृतार्य सभा), आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, पं. ईश्वरचंद्र शास्त्री एवं संस्कृत विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा सम्पन्न कराया गया। भजनोपदेशक पं. वासुदेव व्रती के सुमधुर भजन व उपदेश का भी कार्यक्रम हुआ।

दोपहर १२.०० बजे से महर्षि दयानन्द कृत आर्योद्देश्य रत्नमाला के अनुसार ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता **"कौन बनेगा सहस्त्रपति"** रखी गयी थी, जिसमें ६वीं से लेकर १२वीं तक सभी छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में आचार्य कर्मवीर, आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, पं. वासुदेव व्रती जी एवं श्री दिलीप आर्य (सभा कार्यालय मंत्री) उपस्थित थे। प्रतियोगिता ७वीं कक्षा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजेता छात्राओं को नगद राशि देकर सम्मान किया गया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में आचार्य संजय आर्य, श्री राजेश आर्य एवं विद्यालय के कार्यकर्त्ताओं का विशेष योगदान रहा। इस प्रकार विश्व कल्याण महायज्ञ की पूर्णाहुति दोप. २.०० बजे हुई। तत्पश्चात् ऋषि लंगर करते हुए वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। ***संवाददाता : प्राचार्य, महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर***

thearyasamaj.org

गुरुकुल हरिपुर (ओड़िशा) का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

हरिपुर। प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण शान्त-कान्त-एकान्त वातावरण में स्थित गुरुकुल हरिपुर जुनानी (ओड़िशा) का पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं वार्षिक महोत्सव करुणा-वरुणालय प्रभु की असीम अनुकम्पा, पूज्य सन्तों व विद्वज्जनों के सान्निध्य एवं ओड़िशा, छ.ग., पं. बंगाल, दिल्ली, म.प्र., उ.प्र. आदि प्रान्तों से आगन्तुक श्रद्धालु हजारों नर-नारियों की पावन उपस्थिति में ३०, ३१, जनवरी व १ फरवरी २०१५ को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

त्रि-दिवसीय सम्पूर्ण कार्यक्रमों का उद्घाटन गुरुकुल के यशस्वी प्रधान, सात्विक मनोभाव से ओत-प्रोत आदरणीय श्री जयदेव आर्य राजकोट के शुभ करकमलों से ध्वजोत्तोलन पूर्वक सम्पन्न हुआ। महोत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (गुरुकुल आमसेना), स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (म.प्र.), डॉ. शिवदत्त पाण्डे (उ.प्र.), आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान, छ.ग.प्रां.आ.प्र.सभा), गुरुकुल के संरक्षक श्री खुशहालचन्द्र आर्य (कोलकाता), आचार्य राहुलदेव शास्त्री, डॉ. कैलाशचन्द्र शास्त्री एवं ओड़िशा के अनेक साधु-सन्तों विद्वान् उपस्थित होकर सबको प्रेरित, लाभान्वित किये।

महोत्सव के अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के द्वारा वाणी एवं पाणि प्रतिभा प्रदर्शन हुआ। गुरुकुल के पंचम वर्ष पूर्ति होने पर गुरुकुल से प्रकाशित पंचायतन स्मारिक, मनुष्य जीवन का उद्देश्य, आर्यसमाज का संक्षिप्त परिचय, दैनिक अग्निहोत्र आदि प्रचार पत्रकों का विमोचन कार्यक्रम में श्री केदार कश्यप शिक्षा मंत्री छ.ग. शासन, श्री पुष्पेन्द्र सिंहदेव नगर उन्नयन मंत्री ओड़िशा, श्री बसन्त कुमार पण्डा विधायक नुआपाड़ा, श्री राजुभाई धोलकिया, श्री प्रशन्न पाढ़ी एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि आदि महानुभावों के शुभ कर कमलों से सम्पन्न हुआ। त्रि-दिवसीय के समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के मार्गदर्शन में तथा समस्त आचार्यों, आधिकारियों, सहयोगी कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से सुसम्पन्न हुआ। *संवाददाता : दिलीप जिज्ञासु*

भारतीय नववर्ष २०७२ मंगलमय हो

-: हमारी पहचान :-

१. भारतीय संस्कृति का ह्रास विश्व का नैतिक ह्रास है।

२. अंडा भोज्य पदार्थ नहीं त्याज्य पदार्थ है।

३. कोई भी नशा मनुष्य के आत्मबल को क्षीण करता है।

४. नारी भोग्या नहीं पूजनीया है।

५. नारी लज्जा - राष्ट्र का स्वाभिमान है।

६. हिन्दी त्याज्य नहीं, ग्राह्य है।

७. भौतिकवाद, भोगवाद, (ऐश्वर्यवाद) त्याज्य है, मानवतावाद अध्यात्म वाद ग्राह्य है।

८. आज नई पीढ़ी के बच्चे कच्ची आयु में ही कामुक, निर्लज्ज, ढीठ, स्वच्छन्द और मनमौजी हो रहे हैं, बड़े होकर के क्या गुल खिलायेंगे ?

९. वर्तमान में (अश्लील) चैनल हमारी सभ्यता, संस्कृति . युवापीढ़ी के लिए खतरा है, सोचिए ?

१०. केवल चैनल के हमले इस देश की पहिचान मिटाने में अंतिम कील है।

भारतीय संस्कृति अपनाएँ,
जीवन सफल बनाएँ,
देश को पुनः विश्व गुरु बनायें।

❀ ❀ ❀ ❀

✧ डॉ. हर्षवर्धन शर्मा ✧
ग्रा-पो.-दौताई, गढ़मुक्तेश्वर, जनपद गाजियाबाद (उ.प्र.)

thearyasamaj.org

आर्यसमाज पत्थलगांव में जातकर्म संस्कार सम्पन्न

पत्थलगांव (जशपुर)। आर्यसमाज पत्थलगांव, जिला जशपुर (छ.ग.) में जातकर्म संस्कार के उपलक्ष्य में दिनांक ५-१-२०१५ को यज्ञ, हवन व सत्संग का कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजमान के रुप में श्री देवप्रकाश आर्य धर्मपत्नी श्रीमती कान्ता आर्या उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री रामकिशोर आर्य एवं श्रीमती सत्यादेवी आर्या एवं समस्त परिवार तथा श्री बीरबल आर्य प्रचारक ने आशीर्वाद प्रदान किया। श्री जोगीराम आर्य उपप्रधान सभा, श्री महीपत लाल आर्य की प्रेरणा से यह यज्ञ कार्य सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज गुड्डबहाल में वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

गुड्डबहाल (रायगढ़) । आर्यसमाज गुड्डबहाल, वि.खं. लैलूंगा जिला रायगढ़ (छ.ग.) में श्री रामेश्वर प्रसाद आर्य के ब्रह्मत्व एवं श्री बीरबल आर्य प्रचारक के सहयोग से दिनांक १५ जनवरी २०१५ को वैदिक हवन, प्रवचन एवं सत्संग का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजमान के रुप में श्री महीपत लाल आर्य, श्री शोभाराम आर्य, श्री जगन्नाथ आर्य उपस्थित रहे।

आर्यसमाज पंगसुवा में मकर संक्रान्ति पर्व मनाया गया

पंगसुवा (जशपुर)। आर्यसमाज पंगसुवा, वि.खं. पत्थलगांव, जिला जशपुर (छ.ग.) में मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में श्री महीपत लाल आर्य के ब्रह्मत्व व बीरबल आर्य प्रचारक के सहयोग से दिनांक १४-१-२०१५ को यज्ञ, प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में यजमान के रुप में श्री शोभाराम आर्य, श्री लम्बोदर आर्य (सरपंच), श्री रामेश्वर आर्य, श्री धनेश्वर आर्य उपस्थित हुये।

आर्यसमाज पालीडीह में नामकरण संस्कार सम्पन्न

पालीडीह (जशपुर) । आर्यसमाज पालीडीह, पत्थलगांव, जिला जशपुर में श्री धनेश्वर आर्य प्रधान के प्रपौत्र का नामकरण संस्कार दिनांक १८-१२-२०१४ को सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में श्री रामनाथ आर्य, श्री बीरबल आर्य प्रचारक के सहयोग से यज्ञ किया गया। यजमान के रुप में श्री धनेश्वर आर्य, श्रीमती नियमावती आर्या, पुत्र त्रिलोचन आर्य-ठुलेश्वरी आर्या, प्रपौत्र श्री भूपेन्द्र आर्य-निर्मला आर्या उपस्थित होकर नामकरण संस्कार का कार्यक्रम कराया।

संवाददाता : बीरबल आर्य, प्रचारक रायगढ़

योग–ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक ११ से १९ अप्रेल २०१५ तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराएं जाएंगे तथा योगदर्शन-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित आचार्य श्री सन्दीप आर्य जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य विद्वान भी पधार रहे हैं। डॉ. सुरेश जी योग द्वारा रोगोपचार भी करेंगे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्त बढ़ती जा रही है, अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए **फोन नं. ०९४१९१०७७८८, ०९४१९७९६९४९ अथवा ०९४१९१९८४५१ पर तुरन्त सम्पर्क करें।**

- भारत भूषण आनन्दधाम, आश्रम, प्रधान

thearyasamaj.org

नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ नुआपाली का १३वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नुआपाली (बरगड़ उड़ीसा)। गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के कुलाधिपति योगनिष्ठ पूज्य स्वामी विवेकानन्द की सत्प्रेरणा से संचालित नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ, नुआपाली जिला बरगड़ का तेरहवाँ वार्षिकोत्सव दिनांक २ व ३ फरवरी २०१५ को गुरुकुल परिसर में यज्ञ, भजन व प्रवचन के साथ बड़े धूमधाम से मनाया गया। प्रातःकालीन यज्ञ के उपरान्त वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के मर्मज्ञ पूज्यपाद स्वामी जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में मनुष्य जीवन के उत्थान के लिए पुरुषार्थ को आत्म संबल के रुप में अपनाने पर बल दिया। परिवार, समाज व राष्ट्र के निर्माण के लिए बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए समस्त अभिभावकों को प्रेरित किया। माता-पिता को उनके कर्त्तव्य अकर्तव्य की ओर सचेत किया जिससे उनके बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो सके। सभी श्रद्धालुओं को धार्मिक होने के साथ-साथ बलवान बनने की भी प्रेरणा प्रदान की। अपने उद्बोधन में स्वामी जी ने कहा कि सर्वे भवन्तु सुखिनः का उद्घोष सार्थक है न कि निरीह प्राणी बकरी का। वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन तथा कृषि व गो रक्षा सम्मेलन समस्त ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणियों का सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं बल प्रदर्शन उत्सव का मुख्य आकर्षण था। इस अवसर पर आशीर्वाद प्रदान करने के लिए तपोनिष्ठ स्वामी बलेश्वरानन्द जी महाराज पुण्डरी हरियाणा एवं स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती गुरुकुल आमसेना पधारे हुए थे। उत्सव को महिमा मण्डित करने के लिए आदरणीय डॉ. वेदव्रत जी आलोक, डॉ. मिथलेश कुमार, डॉ. प्रशान्त जी, आचार्य अंशुदेव जी, सभा प्रधान छ.ग. श्री दीनानाथ वर्मा जी सभा मंत्री छ.ग., बहन अपर्णा जी भट्टाचार्य, श्री दयानन्द शर्मा जी, श्री विनोद जायसवाल रायपुर, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के प्रधान व सदस्यगण उपस्थित थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम के सूत्रधार डॉ. सोमदेव जी शतान्शु का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा। स्नातकों में डॉ. शिवशंकर शास्त्री, प्रेमप्रकाश शास्त्री, धीरेन्द्र शास्त्री, पुरन्दर शास्त्री, विद्यासागर शास्त्री, भरत शास्त्री, हिमांशु शास्त्री, डॉ. अजय आर्य, नरेन्द्र शास्त्री आदि की प्रमुख भूमिका रही। गुरुकुल के प्रति अपने जीवन को आहुत करने वाले वेद एवं व्याकरण के निष्णात आचार्य वृहस्पति जी ने समस्त सन्यस्त मण्डल एवं आगंतुकों का अभिनन्दन किया। मानवता के सच्चे उपासक एवं गुरुकुल के अध्यक्ष श्री भगवान देव जी ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापन किया। परम्परा के अनुसार कुलगीतिका व शान्तिपाठ के साथ उत्सव सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : समस्त सदस्य स्नातक परिषद

स्वागतम् शुभ स्वागतम्
नव संवत्सर ! स्वागतम्

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, नववर्ष विक्रमी
सम्वत् २०७२

होली, आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं रामनवमी की

आस्थावान समस्त आर्यजनों एवं सहृदय पाठकों को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

हार्दिक शुभकामनायें व बधाईयाँ

thearyasamaj.org

प्रेरणास्पद व्यक्तित्व : स्व. श्री सम्पतलाल जायसवाल

जीवन भर किया विद्यादान मरणोपरान्त कर गए नेत्रदान

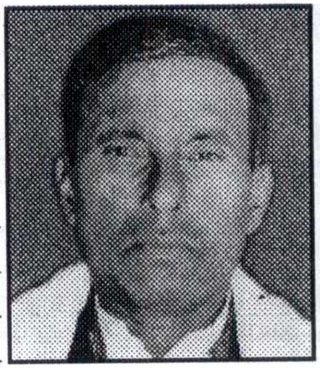

बिलासपुर । श्री सम्पतलाल जायसवाल, मूल निवासी ग्राम निमधा (पेंड्रा)वर्तमान निवास अशोक नगर सरकण्डा बिलासपुर जिनका सम्पूर्ण जीवन लोगों के लिए अनुपम प्रेरणाप्रद रहा। ३ मार्च सन् १९३९ को साधारण परिवार में पिता श्री भागवत प्रसाद जायसवाल के घर जन्मे, जिन्हें बचपन से ही माँ का प्यार से वंचित होना पड़ा, लेकिन मजबूत इरादों ने कभी हार न मानी। बाल्यावस्था में ही स्वतंत्रता संग्राम का ध्वज लेकर गांव में लोगों को प्रभात फेरी के माध्यम से प्रेरित करते रहे। गांव के लोग इन्हें नेता कहकर पुकारते थे। पिताजी के संत स्वभाव होने के चलते इन्हें शुरु से ही राष्ट्र प्रेम तथा साधु संगति खूब भाता था।

कक्षा आठवीं की बोर्ड परीक्षा पास करने के उपरान्त वनवासी सेवा मंडल नामक संस्था में शिक्षकीय कार्य शुरु किया। रतनपुर परसदा निवासी स्व. बद्रीप्रसाद जायसवाल की पुत्री रजमत बाई के साथ विवाह बंधन में बंधे। तीन-तीन पुत्र-पुत्रियों से भरे पूरे परिवार के साथ जीवन भर लोगों को विद्यादान करते रहे।

सेवानिवृत्ति के उपरान्त बिलासपुर से नौकरी कर रहे अपने बच्चों के साथ अशोक नगर सरकंडा में आकर रहने लगे। नाती-पोतों से भरे संयुक्त परिवार में रहना इन्हें खूब पसंद था। अपने सामाजिक दायित्वों को पूर्ण करने के उपरान्त इन्होंने अशोक नगर में ही अपने एक मित्र श्रीराम दुलार साहू को धार्मिक कार्यों के लिए कुछ भूमि देने हेतु प्रेरित किया। जहां पर आज दयानन्द सेवाधाम स्थापित है। यहां निःशुल्क योग, प्राणायाम एवं होम्योपैथिक चिकित्सा के माध्यम से आर्यसमाज के द्वारा जनहित का कार्य अनवरत जारी है।

विगत २ मार्च २०१४ को वैदिक रीति से यज्ञादि करके अपने सन्यास जीवन की शुरुआत की ही थी कि कुछ दिनों बाद अचानक बीमार हो गये और विगत ८ फरवरी २०१५ को उनका निधन हो गया। मरणोपरान्त नेत्रदान करके उन्होंने दो व्यक्तियों के जीवन में नई रोशनी भरने का अभिनव कार्य किया जो हम सभी के लिये अनुकरणीय है। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आर्यसमाज के पुरोहितों ने हवन एवं मन्त्रोच्चार के साथ सम्पन्न कराया तथा उन्हें जनमानस ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी। महाशिवरात्रि के दिन उनके दशगात्र के अवसर पर ऐसे पुण्यात्मा जिन्होने अपना संपूर्ण जीवन विद्यादान के लिए अर्पित किया एवं मरणोपरान्त नेत्रदान कर समाज को परहित भरा जीवन जीने का अनूठा संदेश दे गये। आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि तथा देन आपके तीन संस्कारित सुपुत्र रोशन जायसवाल (व्याख्याता), पुष्कर जायसवाल (सहा. प्रबंधक एफ.सी.आई) एवं सुदर्शन जायसवाल (अध्यापक, डी.ए.व्ही. एवं मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर) है। आप सपरिवार आर्यसमाज के निष्ठावान समर्पित कार्यकर्त्ता है। दिवंगत आत्मा को आर्यसमाज बिलासपुर एवं छ.ग. प्रां. आ. प्रति. सभा की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

संवाददाता : वेदप्रकाश अग्रवाल, अंतरंग सदस्य
आर्यसमाज बिलासपुर

आर्य चेतन परमार को पितृ शोक

दुर्ग । आर्यसमाज आर्यनगर के सदस्य आर्य चेतन परमार के पूज्यनीय पिताश्री श्री नरभैराम परमार का आकस्मिक निधन विगत दिनों हो गया। आप सपरिवार आर्यसमाज के निष्ठावान समर्पित कार्यकर्त्ता है। उनका अन्त्येष्ठि वैदिक रीति से दुर्ग में सम्पन्न हुआ। वे अपने पीछे दो पुत्रों सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गये। दिवंगत आत्मा को आर्यसमाज आर्यनगर एवं छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

- निजी संवाददाता

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में 88वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव की झलकियां

राजिम कुंभ में गूंजा वेद मन्त्रों का पाठ वेदप्रचार की झलकियाँ

thearyasamaj.org

मार्च 2015
डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2015-17
CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,
श्रीमान्

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग –491001 (छ.ग.)

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

(कीतिर्यस्य स जीवति)

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम प्रधान श्री शिवनाथसिंह आर्य का विगत दि. 14-2-2015 को लगभग 73 वर्ष की आयु में हृदयगति के रुक जाने से असामयिक देहावसान हो गया। आप भिलाई स्टील प्लांट भिलाई में उच्च शिक्षा अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त होने केउपरान्त पूरी तरह से आर्यसमाज की सेवा में प्रवृत्त हो गए।

सन् 2001 को जब छत्तीसगढ़ के रुप में एक नये राज्य के रुप में गठन हुआ तो स्वाभाविक रुप से छत्तीसगढ़ स्थित आर्यजनों ने यह महसूस किया कि नियमानुसार नये राज्य में आर्यसमाज की राज्य स्तरीय ईकाई प्रान्तीय सभा का निर्माण होना चाहिए क्योंकि इस समय तक छत्तीसगढ़ की सभी आर्यसमाजें म.प्र. व विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा नागपुर के अधीन थी, सम्पूर्ण अधिकार नागपुर सभा के पास सुरक्षित होने से नई सभा के गठन में कई प्रकार की विसंगतियां व अड़चनें सम्मुख उपस्थित थीं, जिसे व्यवस्थित रुप देना अपने आप में सचमुच एक असम्भव नहीं तो कठिन कार्य अवश्य था, जिसे आपने अपने साथियों के सहयोग से बड़ी सूझबूझ एवं कठोर श्रम से अंजाम तक पहुंचाया, यही वजह थी कि छत्तीसगढ़ की आर्यजनता ने नई सभा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन के साथ ही आपको प्रथम प्रधान के गौरवमय आसन पर बिठा दिया।

2004 से 2007 तक का आपका कार्यकाल छ.ग. के आर्यजगत् में मील का पत्थर साबित हुआ। भव्य स्तर पर आपने वेद प्रचार अभियान आपने चलाकर सम्पूर्ण देश में छत्तीसगढ़ को एक नई पहचान दिलाई। सभा के आर्थिक सहयोग से अनगिनत छोटी-छोटी जनकल्याणकारी संस्थाओं को आपने प्राणवान बनाया।

आपका अप्रत्याशित परलोक गमन जहां परिवार के लिए हृदय विदारक घटना साबित हुई है वहीं छ.ग. के आर्यजगत् के लिए एक अपूरणीय क्षति है। दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा व अग्निदूत परिवार प्रभु से विनम्र प्रार्थना करता है।

–सम्पादक

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.